



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 165]
No. 165]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 30, 2004/श्रावण 8, 1926
NEW DELHI, FRIDAY, JULY 30, 2004/SRAVANA 8, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 30 जुलाई, 2004

अन्तिम जांच परिणाम

विषय: संयुक्त अरब अमीरात (यू.ए.ई.) और चीनी ताइपेई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित विशिष्ट पॉलिस्टर फिल्म/सन कंट्रोल फिल्म के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच।

सं. 14/53/2002-डीजीएडी.— वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975(जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए:

क. जांच की शुरुआत

- (i) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता मैसर्स गरवारे पॉलिस्टर लि० द्वारा घरेलू उद्योग की ओर से प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर 3 मार्च, 2003 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया जिसके द्वारा उपर्युक्त नियमों के उप नियम 5(5) के अनुसार 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की अनुसूची 1 के सीमाशुल्क कोड 392069 के तहत वर्गीकृत संयुक्त अरब अमीरात और चीनी ताइपेई (जिसे आगे संबद्ध देश कहा गया है) मूल के अथवा वहां से निर्यातित विशिष्ट पॉलिस्टर फिल्म/सन कंट्रोल फिल्म (जिसे आगे संबद्ध माल और सन फिल्म भी कहा गया है)।

- (2) जांच 1 अप्रैल, 2002 से 31 दिसंबर, 2002 तक अर्थात् जांच अवधि के लिए की गयी थी ।
- (3) प्राधिकारी के प्रारंभिक जांच परिणामों को 25 जुलाई, 2002 को अधिसूचित किया गया था । प्राधिकारी की सिफारिशों पर अमल करते हुए केन्द्र सरकार ने उपर्युक्त देशों से आयातित संबद्ध माल पर दिनांक 26.8.2002 की अधिसूचना सं० 133/2003 द्वारा अनंतिम शुल्क लगाया था ।

ख. आगे की प्रक्रिया

- (4) प्राधिकारी की प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने वाली सार्वजनिक सूचना जारी होने के पश्चात इस जांच के संबंध में नीचे निर्धारित प्रक्रिया अपनायी गयी है ।
- (i) प्राधिकारी ने 31 अक्टूबर 2003 को आयोजित एक सार्वजनिक सुनवाई में सभी हितबद्ध पक्षकारों को अपने मौखिक विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया । अपने विचार प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित निवेदन करने का अनुरोध किया गया था ।
- (ii) सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात जांच के लिए पक्षकारों द्वारा दिए गए लिखित निवेदनों की प्राधिकारी द्वारा उचित तरीके से जांच की गयी है ।
- (iii) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार 29.6.04 को एक प्रकटन विवरण जारी किया जिसमें सामान्य प्रकटन विवरण और संबंधित पक्षकारों के लिए गोपनीय विवरण और निर्धारण की पद्धति तथा माले के अनिवार्य तथ्य दिए गए थे जिन पर प्राधिकारी अपना निर्णय लेगा ।
- (iv) हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त प्रकटन विवरण संबंधी टिप्पणियों पर इस जांच परिणाम में प्राधिकारी द्वारा उचित रूप से कार्रवाई की गयी है ।
- (v) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय रूपांतरों को इस प्रयोजनार्थ बनाई गई एक सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध रखा और नियम 6(7) के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखा ।
- (vi) इस अधिसूचना में आया *** चिह्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत सूचना को दर्शाता है और प्राधिकारी ने नियमानुसार ऐसा ही माना है ।

(vii) संक्षिप्ता के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्षों में पहले विचारित मुद्दों की पुनरावृत्ति नहीं की गयी है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

(5) विचाराधीन उत्पाद जिसकी इस मामले में जांच शुरू की गयी थी, 'मिश्रित पॉलिस्टर फिल्म' अर्थात् सन/डस्ट कंट्रोल पॉलिस्टर फिल्म जिसे बाजार के और व्यापार के परिदृश्य में भिन्न-भिन्न नामों जैसे सन कंट्रोल फिल्म, सन फिल्म, सोलर फिल्म, सोलर कंट्रोल फिल्म, सोलर विण्डो फिल्म, विण्डो फिल्म के नाम से भी ज्ञात है। इस उत्पाद को ऑटोमोबाइलों और भवनों आदि की खिड़कियों के शीशों पर लगाकर हीट रिजेक्शन, क्लीयर रिडक्शन, यूवी रिजेक्शन और सुरक्षा के लिए अधिकांशतः प्रयोग किया जाता है। उत्पादों का आई टी सी (एच एस) वर्गीकरण 392089.04 है। प्राधिकारी ने इस जांच में विभिन्न निर्धारणों के लिए विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के मुद्दे की जांच की है जो इस प्रकार है:-

ग.1 आवेदकों के विचार

(6) आवेदक ने प्राधिकारी के समक्ष अपने विभिन्न निवेदनों में यह प्रस्तुत किया कि सन कंट्रोल फिल्में मुख्यतः निम्न प्रकार से श्रेणीबद्ध हैं :-

- गैर-परावर्तक फिल्में : विभिन्न शेडों की मानक धूप नियंत्रक फिल्म जो प्रकाश संचरण के भिन्न-भिन्न अंशकों में उपलब्ध हैं।
- परावर्तक अथवा अर्ध परावर्तक फिल्में : यह धातु सतहयुक्त/धातवीय फिल्म लेमीनेशन वाली धूप नियंत्रक फिल्में हैं। धातवीय सतह से अधिक मात्रा में सूर्य की गर्मी को हटाने में सहायता मिलती है।
- मैटी फिल्में : यह फिल्में मैटी आवरण वाली होती हैं जिससे संचरित प्रकाश दूर रहता है। इन्हें गोपनीयता फिल्में भी कहते हैं।
- सुरक्षा फिल्में : ये फिल्में सघन फिल्में हैं। इन्हें दुर्घटना की तोड़-फोड़ के कारण शीशे को टूटने से बचाने के लिए प्रयोग किया जाता है। ये रंगहीन अथवा रंगयुक्त शेडों में होती हैं।

(7) उन्होंने यह निवेदन भी किया है कि किस्म कोई भी हो, संबद्ध वस्तु जिस पर चिपकने वाली सतह होती है, निश्चित रूप से किसी दूसरी फिल्म का लेमिनेशन अवश्य होता है।

लेमीनेशन को रिलीज लाइनर से किया जाता है और अंतिम प्रयोग से पहले हटा दिया जाता है । संबद्ध वस्तु पर लगे आसंजक से शीशे पर फिल्म को चिपकाने में सहायता मिलती है ।

(8) संबद्ध वस्तु के विनिर्माण की प्रक्रिया में सादी पॉलिस्टर फिल्म से रंगदार फिल्म का उत्पादन, सादी पॉलिस्टर फिल्म (लाइनर) पर सिलिकॉन चढ़ाना, रंजीकृत पॉलिस्टर फिल्म पर खेरेंचरोधी परत चढ़ाना, सादी पॉलिस्टर फिल्म पर धातवीय परत चढ़ाना (परावर्तक/अर्धपरावर्तक फिल्मों के लिए), ताप निर्धारक आसंजक से रंजीकृत पॉलिस्टर फिल्म पर धातुयुक्त फिल्म का लेमीनेशन, रिलीज लाइनर का लेमीनेशन शामिल है - आसंजक को रंजीकृत/धातुयुक्त फिल्म पर लगाया जाता है और तब रिलीज लाइनर से लेमिनेट किया जाता है, सिलिटिंग और गुणवत्ता नियंत्रण रखा जाता है ।

(9) आवेदक ने यह तर्क भी दिया कि चीनी ताइपेई और यूएई से निर्यातित उत्पाद तथा आवेदक द्वारा आपूर्त उत्पाद के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है । आवेदक और संबद्ध देशों के उत्पादों द्वारा प्रयोग की जा रही उत्पादन प्रक्रिया के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है । इसलिए आवेदक द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु पाटनरोधी नियमों से संदर्भित अर्थ के भीतर चीनी ताइपेई और यूएई से आयातित वस्तु के समान वस्तु है ।

ग.2 निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

(10) संबद्ध देशों के किसी भी निर्यातक ने मैसर्स ओरप्रो जिसने जांच प्रारंभ का एक सीमित उत्तर प्रस्तुत किया था, के अतिरिक्त जांच प्रारंभ अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है । तथापि, मैसर्स ओरप्रो ने निवेदन किया है कि उन्होंने भारत में संबद्ध वस्तु का निर्यात नहीं किया है और इस प्रकार उनका नाम जांच में निर्यातक के रूप में नहीं होना चाहिए । मैसर्स ओरप्रो द्वारा यह तर्क भी दिया गया है कि घरेलू उद्योग और विदेशी उत्पादकों द्वारा उत्पादित वस्तु के उत्पादन में भिन्न-भिन्न उत्पादन प्रक्रियाएं अपनायी जाती हैं जिनसे उनकी लागत पर प्रभाव पड़ता है ।

ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

(11) प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद चीनी ताइपेई और यूएई मूल के अथवा वहां से निर्यातित विशिष्ट पॉलिस्टर फिल्म अर्थात् सन/डस्ट कंट्रोल फिल्म है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि आवेदक कम्पनी विभिन्न ग्रेडों की सन/डस्ट कंट्रोल पॉलिस्टर फिल्मों का विनिर्माण करती है जिन्हें मोटर वाहन, खिड़कियों और घर की खिड़कियों के जरिए होने वाले उष्मा/प्रकाश संचरण को कम करने के लिए प्रयोग किया जाता है । फिल्मों को

खिड़कियों के शीशों के अंदर वाली सतह पर लगाया जाता है और इसका मुख्य कार्य सूर्य की उष्मा, पराबैगनी प्रकाश और चौंध को कम करना है जो सामान्यतः खिड़कियों के अंदर से आती हैं। इस फिल्म से शीशे टूटने का भी खतरा कम हो जाता है। इस उत्पाद को बाजार परिदृश्य में कई नामों से वर्णन किया जाता है और आवेदक ने जांच के कार्यक्षेत्र में सभी प्रकार की सन कंट्रोल फिल्मों को शामिल किया है।

(12) प्राधिकारी ने अपने प्रारंभिक जांच परिणामों में सभी प्रकार की सन कंट्रोल फिल्म्स को जांच के दायरे में रखा है और आयातित फिल्म्स, नियम की शर्तों के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद के समान उत्पाद माना है।

(13) मैसर्स आरप्रो द्वारा यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग एवं विदेशी उत्पादकों द्वारा उत्पादित समान वस्तु में उत्पादन की अलग-अलग प्रक्रिया अपनायी जाती है। तथापि प्राधिकारी को संबद्ध देश के किसी भी उत्पादक ने उत्तर नहीं दिया है। उपर्युक्त निर्यातक ने न तो अपनी भिन्न उत्पादन प्रक्रिया के दावे के समर्थन में न ही निर्धारित प्रपत्र में कोई डाटा/सूचना प्राधिकारी को उपलब्ध करायी है। मै0 लिटिल एंड कं0, मै0 आरप्रो कंपनी, एल एल सी, यूएई के माध्यम से दाखिल प्रकटन विवरण के अपने उत्तर में अपना दृष्टिकोण दोहराया है और इस बात की पुनः पुष्टि की है कि भारत को निर्यातित माल के वे न तो उत्पादक हैं और न ही निर्यातक। किन्तु अपने उसी अनुरोध में उन्होंने यह कहते हुए कि "आरप्रो द्वारा प्रयुक्त उत्पादन प्रक्रिया, घरेलू उद्योग द्वारा नियोजित प्रक्रिया से अधिक सफल है", खुद को विरोधाभासी साबित किया है। इसलिए, न केवल उनका अनुरोध संदेहपूर्ण है बल्कि निर्यात के क्षेत्र में उनकी स्थिति भी स्पष्ट नहीं है। उपर्युक्त को देखते हुए प्राधिकारी मानते हैं कि इस मामले में एक हितबद्ध पक्षकार के रूप में प्रतिवादी के पास सुने जाने का कोई अधिकार नहीं है और समान वस्तु के संबंध में उनके सभी अनुरोध एवं लागत/कीमत अन्तर का इस मामले से कोई संबंध नहीं है।

(14) प्राधिकारी ने सन कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म्स के विनिर्माण के लिए आवेदक कंपनी द्वारा प्रयुक्त उत्पादन प्रक्रिया का परीक्षण किया है और पाया है कि विनिर्माण की प्रक्रिया में निष्कासन प्रक्रिया द्वारा ईएमजी एवं डीएमटी से सादा पोलिस्टर फिल्म का निर्माण शामिल है। मूल फिल्म के एक विकल्प के रूप में सादा पोलिस्टर फिल्म का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। फिल्म की आसंजनशील सतह को रक्षात्मक परत प्रदान करने के लिए, सिलिकॉन कोटेड रिलीज लाइनर प्रदान करने एवं अन्य गुण-धर्म अथवा परावर्तन प्रदान करने के लिए आवश्यक परत की संख्या पर आधारित पोलिस्टर फिल्म को कलर डाइंग, सिलिकानाइजिंग, खरोंचरोधी कोटिंग, धात्विकीकरण, परतबन्दी इत्यादि के रूप में आगे और प्रसंस्कृत किया जाता है। इस तरह फिल्म विनिर्माण के प्राथमिक एवं बहुप्रचलित तरीके के कारण मै0 आरप्रो के तर्क का कोई मजबूत आधार नहीं दिखता। उत्पादन लागत में संभावित अन्तर के संदर्भ में आरप्रो के दावे का सर्वोत्तम

सामान्य मूल्य निर्धारण पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि वस्तु के भारत को निर्यात अथवा उसके उत्पादन में शामिल न होने के बारे में मै0 आरप्रो द्वारा व्यक्त स्पष्ट दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए इस संबंध में उसके द्वारा दिए गए तर्कों की कोई प्रासंगिकता नहीं है।

(15) प्राधिकारी नोट करते हैं कि मूलभूत कच्ची सामग्री अर्थात् पोलिस्टर फिल्म की लागत जांच अवधि के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में 2 से 2.5 अमरीकी डालर/किग्रा. रही थी जो प्राधिकारी के पास उपलब्ध आयात संबंधी आंकड़ों के अनुसार तैयार सन कंट्रोल फिल्म की आयात कीमत से अधिक है। अतः अलग उत्पादन प्रक्रिया के कारण लागत में अन्तर संबंधित तर्क में कोई दम प्रतीत नहीं होता है।

(16) प्राधिकारी के समक्ष मुद्दा यह है कि क्या संबद्ध देशों से आयातित फिल्म घरेलू उत्पाद की तुलना में समान उत्पाद है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस संबंध में मार्गदर्शी सिद्धांत उत्पादों की भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं तथा उद्योग एवं उनके वाणिज्यिक एवं तकनीकी प्रतिस्थापनीयता का है। इस संबंध में प्राधिकारी ने यह पाया है कि यद्यपि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित और संबद्ध देशों से आयातित सन कंट्रोल फिल्मों के अनेक ग्रेड हैं तथापि मूलभूत सामग्री एवं उत्पादन प्रक्रिया समान है। सिंगल प्लार्ड नान रिफ्लेक्टिव एवं नान स्क्रेच रेसिस्टेंट फिल्मों से लेकर डबल/ट्रिपल प्लार्ड रिफ्लेक्टिव और स्क्रेच रेसिस्टेंट फिल्मों तक सभी फिल्मों सन कंट्रोल गुण धर्म, खरोंचरोधी गुणधर्म में भिन्न-भिन्न होती हैं और उनमें संवर्द्धित प्रसंस्करण तथा परिणामी संवर्द्धित कीमत अन्तर होता है। उपभोक्ता के लिए सीधा उत्पाद होने के कारण एक ग्रेड की तुलना में दूसरे ग्रेड का उपयोग कीमत संबंधी विचार और उपभोक्ता की अवधारण पर निर्भर होता है क्योंकि सभी ग्रेडों का उपयोग अदल-बदलकर किया जा सकता है।

(17) पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) में यह भी विनिर्दिष्ट है कि, "समान वस्तुओं का तात्पर्य ऐसी किसी वस्तु से है जो हर तरह से जांचाधीन उत्पाद के समानुरूप अथवा समान है अथवा ऐसी किसी वस्तु के अभाव में ऐसी अन्य वस्तु है जिसकी विशेषताएं जांचाधीन वस्तुओं की विशेषताओं से अत्यधिक मिलती जुलती हैं।

(18) इस जांच में विरोधी हितबद्ध पार्टियों में से किसी ने भी समान वस्तु के बारे में कोई मुद्दा नहीं उठाया है। यद्यपि आरप्रो ने यह दावा किया है कि विदेशी उत्पादक अलग प्रकार की उत्पादन प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं तथापि इस पार्टी द्वारा अपनाये गये इस दृष्टिकोण कि वह संबद्ध वस्तु का उत्पादक अथवा भारत को उसका निर्यातक नहीं है, को ध्यान में रखते हुए इस मामले में उनके अनुरोधों की कोई प्रासंगिकता नहीं है। प्राधिकारी ने यह पाया है कि उत्पाद की तकनीकी एवं वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देशों से निर्यातित वस्तु के समान है।

(19) तदनुसार प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सन/डस्ट कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म नियमों के अर्थ के भीतर उनके व्यापारिक अथवा वाणिज्यिक नामों पर ध्यान दिये बिना संबद्ध देशों से आयातित वस्तु के समान है।

घ. घरेलू उद्योग का आवरण

(20) यह आवेदन मै0 गरवारे पोलिस्टर लि0, मुंबई द्वारा दायर की गयी है और वह देश में संबद्ध वस्तु का एकमात्र उत्पादक है। आवेदक का हिस्सा जांच अवधि के दौरान भारत में संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादन का 100% रहा है। प्राधिकारी इस बात की पुष्टि करते हैं कि आवेदक नियम 5 (क) और (ख) तथा नियम 2 (ख) में यथापेक्षित घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करने के लिए अपेक्षित मानदंडों को पूरा करता है।

ड. न्यूनतम सीमाएं

(21) चीनी ताइपेई तथा यूएई से हुए निर्यातों का हिस्सा समान वस्तु के कुल आयातों में क्रमशः लगभग 49% और 32% है और वे उपर्युक्त जांच के प्रयोजनार्थ न्यूनतम सीमा से अधिक है।

च. उठाए गये अन्य मुद्दे

(22) मै0 आरप्रो कंपनी एलएलसी, शारजाह, यूएई ने अपने सीमित उत्तर में निम्नलिखित अनुरोध किये थे:-

- कि वे पाटित वस्तुओं के न तो उत्पादक हैं और न ही निर्यातक।
- कि वे व्यापार यूएई के भीतर पाटित वस्तुओं के व्यापारी के रूप में करते हैं न कि भारत को उसके निर्यातक के रूप में।
- कि उन्होंने यूएई के भीतर संबद्ध वस्तु की बिक्री परफेक्ट ट्रेडिंग कंपनी नामक कंपनी को की है जिसने बाद में वस्तु को भारत में ग्राहकों को भेजा है।
- कि उपर्युक्त कारणों से भारत में उक्त वस्तु के आरोपित पाटन की जांच गलत और भ्रामक है। अतः उनके खिलाफ जांच समाप्त कर दी जानी चाहिए।

(23) प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै0 आरप्रो जाहिर तौर पर संबद्ध वस्तु का न तो उत्पादक है और न ही भारत को उसका निर्यातक और न ही उसने इस संबंध में ऐसा कोई विस्तृत उत्तर दिया है जिस पर इस मामले में निर्णय लेने के लिए विचार किया जा सके। इस पार्टी द्वारा अपनाये गये दृष्टिकोण को देखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि वे इस मामले में हितबद्ध पार्टी

नहीं है और इस मामले में उनके अनुरोधों की कोई प्रासंगिकता नहीं है। प्राधिकारी ने ये भी नोट किया है कि जांच किसी पार्टी विशेष के खिलाफ शुरू नहीं की गयी थी। मै0 आरप्रो ने स्वयं सीमित अनुरोध किया है और साथ ही साथ उसे जांच से अलग करने का दावा किया है क्योंकि वे भारत के लिए संबद्ध वस्तु का न तो उत्पादक है और न ही निर्यातक।

(24) प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस जांच के संबंध में किसी पार्टी द्वारा अन्य कोई मूलभूत अथवा सामान्य मुद्दा नहीं उठाया गया है और इसलिए पाटनरोधी करार के अनुबंध 2 के पैरा 1 के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारण की कार्यवाई की गयी है।

छ. पाटन मार्जिन का निर्धारण

(25) धारा 9 क(1)(ग) के अन्तर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:

- (i) " सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो, या
 - (ii) जब व्यापार के सामान्य रूप में निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में समान वस्तु की बिक्री न हो या जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में विशेष बाजार स्थिति या बिक्री की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्री से उचित तुलना नहीं की जा सकती, तब सामान्य मूल्य इनमें से कोई एक होगा:
 - (iii) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किये जाने पर समान वस्तु की उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य ; या
 - (iv) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत;
 - (v) बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा
- (26) प्राधिकारी ने जांच से संबंधित सूचना प्रस्तुत करने और टिप्पणियाँ यदि कोई हों, को उपर्युक्त नियमों के अनुसार प्रस्तुत करने के लिए संबद्ध देशों से निर्यातकों को अवसर प्रदान किया। प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों/प्रतिनिधियों को भी पत्र लिखे।

- (27) प्रारंभिक जांच अधिसूचना में नामांकित देशों के किसी भी निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया और निर्यात के देशों में उत्पाद के सामान्य मूल्य और भारत को अपने निर्यात कीमत के संबंध में कोई सूचना नहीं दी। केवल मै0 आरप्रो, यूएई ने बहुत ही सीमित निवेदन किया जिसमें उन्होंने यह स्वीकार किया कि उन्होंने भारत को उत्पाद का निर्यात नहीं किया है और यह तर्क भी दिया कि घरेलू उद्योग तथा विदेशी उत्पादक अलग-अलग उत्पादन प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हैं। तथापि यह दावा निर्यात के देशों में उत्पादकों द्वारा उत्पाद की विनिर्माण प्रक्रिया और लागत के किसी साक्ष्य से साबित नहीं हुआ।
- (28) इसलिए प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर उत्पादों का सामान्य मूल्य परिकलित किया है। प्राधिकारी को यह मालूम हुआ कि फिल्मों की विनिर्माण प्रक्रिया में आधार फिल्म के रूप में प्लेन पोलिस्टर फिल्म (डी.एम.टी. और एम.ई.जी. के पोलिस्टर ग्रेन्यूल्स से निर्मित) का प्रयोग किया जाता है और सिलिकान और खरोंचरोधी परत चढ़ाकर, धातुवीयकरण और लेमिनेशन आदि करके आगे प्रसंस्करण किया जाता है। विनिर्माण की लागत परिकलित करने के लिए प्राधिकारी ने उपलब्ध सूचना और पाटनरोधी करार के अनुबंध II के पैराग्राफ-1 के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना सहित विदेश व्यापार महानिदेशालय द्वारा प्रकाशित मानक निविष्टि-उत्पादन मानदंडों (एसआईओएन) पर विश्वास किया है।

छ.1 सामान्य मूल्य (चीनी ताइपेई)

- (29) जहां तक चीनी ताइपेई में सामान्य मूल्य का संबंध है, आवेदक ने यह तर्क दिया है कि वे चीनी ताइपेई को उसी उत्पाद का पर्याप्त निर्यात करते हैं। आवेदक का तर्क है कि चीनी ताइपेई में जिस कीमत पर उत्पाद का आयात किया गया है वह ऐसी कीमत है जिस पर उपभोग के लिए चीनी ताइपेई में माल की खरीद की गई है और इसे उस कीमत के तुलनीय समझा जाए जिस पर माल को चीनी ताइपेई में बेचा जाए। इसलिए इस कीमत से चीनी ताइपेई में माल के पहुंचने तक सभी खर्चों का अनुमान लगाकर चीनी ताइपेई को उनकी निर्यात कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य मालूम होना चाहिए। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस तर्क में काफी बल है। आवेदक द्वारा उसी देश को निर्यातित उत्पाद जिससे पाटन का आरोप लगाया गया है, उस देश के वाणिज्य में ऐसी कीमत पर प्रवेश करते हैं जो उस देश में सामान्य कीमत का उचित अनुमान होगा। तथापि, प्राधिकारी परिकलित मूल्य पद्धति के आधार पर सामान्य मूल्य का अनुमान लगाने और सर्वाधिक परिकलन पद्धति को अपनाने का प्रस्ताव करते हैं चाहे इस मामले में किसी हितबद्ध पक्षकार से कोई सहयोग न मिला हो।

- (30) प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्माण और बेची गई सन कंट्रोल फिल्मों विभिन्न किस्म की हैं और विभिन्न किस्मों की लागत प्रयोग की गई किस्मों की परतों और प्रयोग की गई सतहों की किस्मों की संख्या के अनुसार भिन्न-भिन्न होती हैं। उत्पाद की कीमतें भी उपर्युक्त विशेषताओं के साथ-साथ ग्राहक के कीमत अनुमान के अनुसार अलग-अलग होती हैं। हालांकि यह संभव है कि विभिन्न किस्म की सन फिल्मों जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयात की गई हों परन्तु संबद्ध देशों के निर्यातकों के पूर्ण रूप से असहयोग करने के कारण उन्हें अलग-अलग करना संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त, जैसाकि अधिकारी के पास उपलब्ध आयात आंकड़ों से प्रदर्शित होता है नामांकित देशों से आयातित संबद्ध वस्तुओं की कीमतों की जांच से मालूम होता है कि औसत कीमत बहुत ही कम 67/रु० प्रति किग्रा. है जिससे मूल कच्ची सामग्री अर्थात् पोलिस्टर फिल्मों की लागत भी पूरी होती मालूम नहीं होती है। इस संबंध में प्राधिकारी ने वर्ष 2002-03 की विभिन्न तिमाहियों के लिए पोलिस्टर फिल्मों की तिमाही व्यावसायिक रिपोर्ट में दी गई सूचना के अनुसार 12 माइक्रोम पोलिस्टर फिल्मों की अन्तर्राष्ट्रीय कीमतों का संदर्भ लिया जिससे मालूम होता है कि जांच अवधि के दौरान कीमत 2 अमरीकी डालर से 2.5 अमरीकी डालर प्रति किग्रा. के बीच रही है। इसलिए प्राधिकारी का यह विचार है कि पाटन मार्जिन की गणनाओं के प्रयोजनार्थ उत्पादों की किस्म-वार अथवा ग्रेडवार तुलना इस प्रकार की स्थिति में निरर्थक है। संबंधित पक्षकारों द्वारा सहयोग के स्तर और प्राधिकारी के पास उपलब्ध आंकड़ों पर विचार करते हुए प्राधिकारी ने सर्वाधिक मूल उत्पाद अर्थात् एकल प्लाई गैर-खरोंचरोधी और गैर-परावर्ती फिल्मों पर आधारित सामान्य मूल्य के न्यूनतम संभव अनुमानों का सहारा लेकर उचित तुलना सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से सामान्य मूल्य के अत्यन्त संतुलित अनुमानों को अपनाया है।
- (31) दो वैकल्पिक आधार पर निर्धारित सामान्य मूल्य की तुलना की गई है और उत्पादन की लागत के अनुमानों के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण अत्यन्त संतुलित और उपयुक्त प्रतीत होता है। परिस्थितियों के अन्तर्गत, जैसाकि ऊपर स्पष्ट किया गया है, सामान्य मूल्य उपर्युक्त नियम 6(8) के अनुसार बिक्री, सामान्य, प्रशासनिक लागतें और लाभ के लिए उपयुक्त समायोजन के साथ उत्पादन की लागत के अनुमानों पर आधारित रहा है। तथापि, परिवर्तनशील बिक्री खर्चों से संबंधित व्यापार समायोजनों के स्तर की परिकलित सामान्य मूल्य पर अनुमति दी गई है ताकि इसे युक्तिसंगत बनाया जा सके। तदनुसार सन/डस्ट कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म का चीनी ताइपेई से सभी निर्यातों के लिए सामान्य मूल्य 48.44 रु० = 1.00 अमरीकी डालर की विनिमय दर पर **** रु० (**** अम. डालर) परिकलित किया गया है।

छ.2 सामान्य मूल्य (यूएई)

32. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि यूएई से किसी निर्यातक(उत्पादक) ने निर्धारित प्रश्नावली के अनुसार सामान्य मूल्य के संबंध में कोई सूचना अथवा उत्तर नहीं दिया है। इसलिए प्राधिकारी

यह मानते हैं कि नियमों के अंतर्गत की गई परिकल्पना के अनुसार यूएई के किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी को सहयोग नहीं दिया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि आवेदक ने यूएई को कम मात्रा में संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है परन्तु वह पूर्व खण्ड में किए गए स्पष्टीकरण के अनुसार यूएई में सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए उचित मात्रा प्रस्तुत नहीं करते।

(33) इन प्रस्तुतियों में प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6(8) के अंतर्गत उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के अनुसार यूएई में सन डस्ट कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म के उचित लाभ सहित उत्पादन की अनुमानित लागत के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है। पूर्व खण्ड में दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार व्यापार समायोजनों के स्तर सहित उन्हीं सिद्धांतों को यूएई के मामले में भी लागू किया गया है। तदनुसार यूएई के सभी निर्यातों के लिए सन/डस्ट कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म का सामान्य मूल्य 48.44 रू० = 1.00 अमरीकी डालर की विनिमय दर पर *** रू० (*** अम. डालर) प्रति किग्रा. परिकलित किया गया है।

छ. 3 निर्यात कीमतें

(34) चीनी ताइपेई और यूएई के किसी भी निर्यातक और भारत में आयातकों ने प्रश्नावली के उत्तर में निर्यात कीमत के ब्यौरे प्रस्तुत नहीं किए हैं। यद्यपि आरप्रो ने जांच शुरूआत की सूचना का जवाब दिया है और यह माना है कि उन्होंने परफैक्ट ट्रेडिंग को कुल सामग्री बेची है तथापि न ही आरप्रो और न ही परफैक्ट ट्रेडिंग ने भारत को अपने निर्यातों के संबंध में कोई सूचना उपलब्ध कराई है।

(35) आवेदक ने निजी आंकड़ा प्रस्तुतकर्ता एजेंसी द्वारा (मै० इम्फोरमेट, मुंबई द्वारा यथा संकलित और प्रस्तुत आयातों की सौदेवार सूचना) दी गई सूचना के अनुसार वास्तविक आयातों के आधार पर आयात संबंधी सूचना उपलब्ध कराई है तथापि जांच अवधि के दौरान प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस से संबंधित सूचना के लिए अनुरोध किया है। जिन्होंने जांच अवधि के दौरान चीनी ताइपेई सहित संबद्ध देशों से किए गए आयातों के सौदेवार ब्यौरे उपलब्ध कराए थे। इस प्रकार उपलब्ध कराई गई सूचना की ब्यौरेवार जांच की गई थी और इसी आधार पर आयातों की मात्रा और मूल्य निर्धारित किया गया था। निर्यातकों से वास्तविक निर्यात कीमत उपलब्ध न होने के कारण प्राधिकारी ने सम्मिलित देशों से निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए इस सूचना को स्वीकार किया है।

(36) प्राधिकारी ने भारत को सीआईएस निर्यात कीमत का परिकलन करने के लिए संबद्ध देशों से आयातों के संबंध में सभी तुलनीय सौदों की भारत औसत निर्यात कीमत की गणना की है। इस प्रकार निर्धारित निर्यात कीमत सीआईएस निर्यात कीमत होने के कारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर समुद्री भाड़े, बीमे और कमीशन के लिए समायोजन, जो कुल *** अम.डालर/किग्रा. बनती है, को संबंधित निर्यातकों द्वारा पूर्णतः असहयोग को ध्यान में रखते हुए माना गया है।

(37) इस प्रकार परिकलित जांच अवधि के दौरान कारखाना बाह्य निर्यात कीमत निम्नलिखित है:-

चीनी ताइपेई

चीनी ताइपेई	*** रू०/प्रतिकिग्रा.	*** अम.डा.प्रतिकिग्रा.
समायोजनों से		*** अम.डा.प्रतिकिग्रा.
आयातों की सीआईएफ		
कीमत		

यूआई

यूआई	*** रू०/प्रतिकिग्रा.	*** अम.डा.प्रतिकिग्रा.
समायोजनों से		*** अम.डा.प्रतिकिग्रा.
आयातों की सीआईएफ		
कीमत		
यूआई से कारखाना बाह्य		*** अम.डा.प्रतिकिग्रा.
निर्यात कीमत		

छ.4 पाटन मार्जिन

(38) निर्यात के देश में संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य के साथ निर्यात कीमत की तुलना करने से संबंधित नियम में इस प्रकार व्यवस्था है:-

"पाटन का मार्जिन निकालते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच एक उचित तुलना करेगा । यह तुलना व्यापार के एक समान स्तर पर सामान्यतया कारखाना द्वार स्तर पर की जाएगी और यथा संभव उसी समयावधि के दौरान की गयी बिक्रियों के संबंध में की जाएगी । जो अंतर कीमत तुलनीयता पर प्रभाव डालते हैं, उनके लिए प्रत्येक मामले में गुण-दष के आधार पर उचित छूट दी जाएगी । उक्त अंतर में बिक्री की शर्तें, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं, भौतिक विशेषताएं तथा अन्य ऐसे अंतर शामिल ह, जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किए जाते हैं ।

(40) उपर्युक्त नियमों के अनुसार प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन का मूल्यांकन करने के लिए भारत औसत कारखाना बाह्य सामान्य मूल्य के साथ भारत औसत कारखाना बाह्य निर्यात कीमत के साथ तुलना की है ।

(41) जैसाकि पहले कहा गया है सहयोग की कमी को ध्यान में रखते हुए नामांकित दोनों देशों में संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्यों की गणना उत्पाद के न्यूनतम ग्रेड पर आधारित उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर की गई है। इस मूल्य को पाटन मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ भारित औसत कारखाना बाह्य सामान्य मूल्य के रूप में भी स्वीकार किया गया है। भारित औसत कारखाना बाह्य निर्यात कीमत का अनुमान भी, जैसा पहले बताया गया है, स्वीकार्य समायोजनों के साथ डीजीसीआई एंड एस के आयात आंकड़ों के आधार पर लगाया गया है। इस प्रकार प्राधिकारी यह मानते हैं कि सामान्य मूल्य के साथ निर्यात कीमत की तुलना नियमों के अनुबंध-I के अर्थों के भीतर उचित है।

(42) तदनुसार, संबद्ध देशों में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निम्नानुसार पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है:-

देशवार निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य(डा./मी. .टन)	निर्यात कीमत(डा./मी. टन)	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन(%)
यूएई (सभी निर्यातक)	***	***	***	390%
चीनी ताइपेई सभी निर्यात	***	***	***	448%

(43) इस प्रकार मूल्यांकित पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है और इन्हें महत्वपूर्ण माना गया है।

(44) आवेदक कंपनी ने प्रकटन विवरण के अपने उत्तर में यह अनुरोध किया है कि चीनी ताइपेई के संबंध में प्रारंभिक जांच परिणाम और प्रकटन विवरण के बीच पाटन मार्जिन में काफी परिवर्तन किया गया है और यह अनुरोध किया है कि चीनी ताइपेई के मामले में सामान्य मूल्य पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए। तथापि प्राधिकारी नोट करते हैं कि दोनों देशों के संबंध में सामान्य मूल्य का परिकलन सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर किया गया है और सामान्य मूल्य के निर्धारण के आधार का खुलासा पक्षकारों के समक्ष कर दिया गया है। जहां तक निर्यात कीमत का संबंध है, पूर्ववर्ती निर्धारण द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित था, जिसे अब डीजीसीआईएण्ड एस आंकड़ों के आधार पर तैयार किया गया है। तदनुसार प्राधिकारी उपर्युक्तानुसार पाटन मार्जिन निर्धारण संबंधी अपने निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं।

ज. क्षति निर्धारण

ज.1 घरेलू उद्योग के विचार:

(45) आवेदक ने अपने आवेदन में अनुरोध किया है:-

- (क) कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों में भारी वृद्धि हुई है। आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है और यह वृद्धि अत्यधिक एवं वास्तविक है।
- (ख) कि भारत में उत्पाद के आयातों की तुलना में चीनी टाईपेई/यूएई से आयातों की मात्रा में काफ़ी वृद्धि हुई है।
- (ग) कि भारत में घरेलू उद्योग के उत्पादन की तुलना में आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है।
- (घ) कि भारत में संबद्ध वस्तु की मांग की तुलना में आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है।
- (ङ.) कि आयातों की मात्रा में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की बिक्री में कमी आई है।
- (च) कि जिस उत्पादन में वर्ष 2001-02 तक वृद्धि हो रही थी उसमें प्रस्तावित जांच अवधि में कमी आई है।
- (छ) इसके अलावा यह भी देखना चाहिए कि घरेलू उद्योग की निर्यात संबंधी गतिविधियां काफी अधिक हैं। इस प्रकार वर्ष 2001-02 तक उत्पादन में वृद्धि निर्यात की उच्च मात्रा के कारण हुई है। पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों में कमी आई है।
- (ज) कि घरेलू उद्योग के घरेलू बाजार में बिक्री की मात्रा, जिसमें वर्ष 2001-02 तक वृद्धि हो रही है उसमें जांच अवधि में कमी आई है। संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण, भारत में उत्पादन की मांग में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग अपनी बिक्री में वृद्धि नहीं कर सका है।
- (झ) कि यदि संबद्ध देशों से पाटित आयात जारी रहा तो, घरेलू उद्योग की बिक्री में आगे भी कमी आएगी क्योंकि कीमतों में कमी करने के बावजूद भी, आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कटौती हो रही है।

- (म) कि वर्तमान सीमाशुल्क लगाने के बाद आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों से अत्यधिक कम है। अतः घरेलू उद्योग की कीमत में भारी कटौत करनी पड़ रही है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा में अत्यधिक कमी आई है।
- (न) कि घरेलू उद्योग को घरेलू बाजार में बिक्रियों से वित्तीय घाटे उठाने पड़ रहे हैं।
- (त) कि जिन कीमतों पर आयात किए गए हैं उनसे घरेलू उद्योग की कीमतों पर गंभीर कीमत दमनकारी/ह्रासकारी प्रभाव पड़ा है।
- (ड) कि घरेलू उद्योग को देश में भारी पाटन के परिणामस्वरूप कीमतों को उत्पादन लागत से कम करने पर मजबूर होना पड़ा है। घरेलू उद्योग की वित्तीय स्थिति काफी खराब हो गई है। घरेलू उद्योग को लाभ की स्थिति से भारी वित्तीय घाटे की स्थिति में आने को बाध्य होना पड़ा है।
- (ढ) कि वह कीमत जिस पर इस सामग्री का भारत को निर्यात किया जा रहा है, संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन से संबंधित कच्ची सामग्री की लागत से काफी कम है।
- (ण) कि वह कीमत जिस पर इस सामग्री का निर्यात हो रहा है, उस कीमत से भी कम है जिस पर प्लेन पोलिस्टर फिल्म का आयात किया जा रहा है।
- (त) कि सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत को देखते हुए पाटन मार्जिन न केवल अधिक है बल्कि काफी अधिक है।
- (थ) कि प्रचलित सीमाशुल्क के स्तर को प्रभासित करने के बाद आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है। इस प्रकार, घरेलू उद्योग को अत्यधिक कीमत कटौती का सामना करना पड़ रहा है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग ने भारी बिक्री मात्राएं गंवाई हैं।
- (द) कि आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से अत्यधिक कम है, जिसकी वजह से बाजार में कीमतें कम हुई हैं।
- (ध) कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से कम है। अतः आयातों के कारण बाजार में कम कीमत पर बिक्री की गई है।

- (न) कि जिस कीमत पर सामग्री का आयात किया जा रहा है, उससे यदि अन्य परिवर्ती लागत को छोड़ भी दिया जाए तो कच्ची सामग्री की लागत भी वसूल नहीं की जा सकती है। यहां तक कि घरेलू उद्योग आयातित सामग्री की कीमतों की बराबरी भी नहीं कर सकती।
- (प) कि कंपनी को मामूली लाभ हो रहा है। अत्यधिक प्रतिस्पर्धी कीमत निर्धारण होने के बावजूद पाटित आयातों की अनुचित कीमतों के कारण कंपनी के माल की मात्रा में वृद्धि के बजाय कमी हो रही है।
- (फ) कि उत्पादन में कमी करने के बावजूद, घरेलू उद्योग को मालसूची स्तर में वृद्धि का सामना करना पड़ रहा है।
- (ब) कि उत्पाद की मांग में वृद्धि तथा इसके सकारात्मक होने के बावजूद भी पाटित आयातों के कारण घरेलू बाजार में कंपनी की वृद्धि नकारात्मक रही है।
- (भ) कि अन्य देशों से आयातों की मात्रा एवं मूल्य या तो न्यूनतम स्तर पर हैं या इसकी कीमतें काफी अधिक हैं। अन्य देशों से आयात के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो रही है।

ज.2 अन्य हितवद्ध पक्षकों के विचार

मै0 ऑरप्रो कंपनी एलएलसी (ऑरप्रो), शारजाह, संयुक्त अरब अमीरात

(46) मै0 ऑरप्रो ने यह अनुरोध किया है कि गरवारे पोलिस्टर लिमिटेड (गरवारे) को यूएई से भारत को हुई बिक्रियों से वास्तविक क्षति या क्षति नहीं हुई है। इसके विपरीत गरवारे ने लिखित रूप में ये कहा है कि उसे वित्त वर्ष 2002-2003 के दौरान अपने सन कंट्रोल फिल्म प्रभाग के कारोबार के 50 करोड़ रुपये तक बढ़ाये जाने की उम्मीद है। पक्षकार ने यह अनुरोध किया है कि सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण एवं क्षति निर्धारण) नियम 1995 (पाटनरोधी नियमावली) के नियम 11 के अंतर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी को निष्कर्ष तभी रिकॉर्ड करने चाहिए जब भारत में पाटित वस्तुओं के आयात के कारण भारत में स्थापित किसी उद्योग को वास्तविक क्षति या इसका खतरा उत्पन्न हो। पाटनरोधी नियमावली के नियम 11(2) के अंतर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए पाटित आयातों की मात्रा सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करना, समान वस्तुओं के घरेलू बाजार में कीमतों पर इनके प्रभाव और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 2 में स्थापित सिद्धांतों के अनुसार ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभावों पर विचार करना अपेक्षित है।

(47) मै0 ऑरप्रो ने यह अनुरोध किया है कि अनुबंध 11 का बिंदु (iv) अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए बिक्रियों, लाभ आदि में प्राकृतिक तथा संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी आर्थिक कारकों और संकेतकों का मूल्यांकन करना अपेक्षित है। इस पक्षकार द्वारा यह तर्क दिया गया है कि गरवारे की सन कंट्रोल फिल्म डिवीजन में बिक्रियों या लाभों में ऐसी कोई प्राकृतिक या संभावित गिरावट नहीं हुई है। यह अनुरोध किया गया है कि प्रारंभिक जांच परिणामों के पैराग्राफ 16 (ख)(3) के अनुसार प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि संबद्ध वस्तुओं के प्रभावी उत्पादन में भारी वृद्धि हुई है। प्रारंभिक जांच परिणामों के पैराग्राफ 16 (ख)(3) में प्राधिकारी ने यह पाया है कि उत्पादन में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है। अतः भारत सरकार यह नोट करने में विफल हुई है कि पाटन के आरोप के होते हुए भी गरवारे के लाभ एवं कारोबार में काफ़ी वृद्धि हुई है और यह कि इसलिए यह माना जाना चाहिए कि गरवारे को ऐसे पाटन के परिणामस्वरूप कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई है।

ज.3 प्राधिकारी द्वारा निर्धारण

ज.3.1 क्षति का संचयी मूल्यांकन

(48) नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध 11 (iii) में आगे यह व्यवस्था है कि " यदि किसी मामले में एक से अधिक देशों के उत्पादों पर एक साथ पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा हो तो प्राधिकारी केवल तब ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी रूप से आकलन करेंगे जब यह निर्धारित होता है कि प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पाटन मार्जिन निर्यात के प्रतिशत के रूप में दो प्रतिशत से अधिक हो तथा प्रत्येक देश से हुए आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों का तीन प्रतिशत हो या जहां अलग-अलग देश का निर्यात तीन प्रतिशत से कम हो, वहां आयात संचयी रूप से समान वस्तु के आयातों को सात प्रतिशत से अधिक बनता हो और आयातों का संचय मूल्यांकन, आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के अंश में उचित हो।

(49) प्राधिकारी ने क्षति के संचयी आकलन के मुद्दे की जांच हेतु निम्नलिखित पर विचार किया है और यह देखा है कि:

i) संबद्ध देशों में से प्रत्येक से पाटन मार्जिन निर्धारित सीमा से अधिक है।

ii) संबद्ध देशों में से प्रत्येक से हुए आयातों की मात्रा निर्धारित सीमाओं से अधिक है।

- iii) घरेलू उत्पाद और विभिन्न देशों के उत्पादकों द्वारा आपूर्ति किया गया उत्पाद समान उत्पाद है ।
- iv) आयातित उत्पाद और घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तुएं प्रति स्थापनीय हैं और इन्हें एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जा रहा है । विभिन्न देशों से हुए आयातों संबंधी सौदे-वार सूचना से यह पता चलता है कि आयात व्यापारियों द्वारा किए गए हैं जिन्होंने सामग्री को पुनर्बिक्री के लिए खरीदा है । इस प्रकार दोनों देशों द्वारा आपूर्ति की गई वस्तुएं एक बाजार में प्रतिस्पर्धा कर रही थीं ।
- v) संबद्ध देशों से आपूर्ति किए गए उत्पादों का तुलनीय बिक्री श्रृंखलाओं और समान वाणिज्यिक स्थितियों के जरिए एक ही अवधि के दौरान विपणन किया जा रहा है।
- vi) संबद्ध देशों में से प्रत्येक से आयातों में वृद्धि हुई है ।
- vii) संबद्ध देशों में घरेलू उत्पादक एवं निर्यातों द्वारा उत्पाद की बिक्री समान श्रेणी के उपभोक्ताओं को की जा रही है ।
- viii) दोनों देशों से आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में महत्वपूर्ण कटौती हुई है ।

(50) प्राधिकारी मानते हैं कि चूंकि संबद्ध देशों से होने वाले निर्यातों की आपस में प्रतिस्पर्धा होने के साथ-साथ उन्हें भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तुओं की ओर से भी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है, इसलिए इस मामले में क्षति का संचयी आकलन किया जाना उचित है ।

ज.3.2 क्षति मानदंडों की जांच

(51) उपरोक्त नियम 11, अनुबंध-II के अंतर्गत जब क्षति के बारे में निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष मेंपाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में मूल्यों पर उनका प्रभाव, ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभावों समेत सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा । मूल्यों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात की जांच करनी आवश्यक समझी जाती है कि क्या भारत में समान वस्तु के मूल्य की तुलना में पाटित आयातों से

मूल्यों में पर्याप्त गिरावट आयी है अथवा क्या अन्यथा ऐसे आयातों का उद्देश्य मूल्यों को काफी हद तक स्थिर रखना है अथवा मूल्य वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी हद तक बढ़ गयी होती।

(52) भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमावली के अनुबंध-II(iv) के अनुसार ऐसे अन्य संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे कि उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा एवं मार्जिन इत्यादि।

(53) जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है घरेलू उद्योग पर प्रभाव डालने वाले सभी आर्थिक मानदंडों, जैसे कि उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा इत्यादि की जांच निम्नानुसार की गई है:-

(क) आयातों का मात्रा संबंधी प्रभाव

(54) डीजीसीआई एंड एस, कोलकाता द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना/आंकड़ों के आधार पर संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा तथा घरेलू उद्योग पर उसके प्रभाव का निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है:

विवरण	सूचीकृत 1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
कि.ग्रा. में	मात्रा	मात्रा	मात्रा	मात्रा
आयात				
चीनी ताइपेई	100	917.49	712.88	3998.62
इकाई मूल्य(रु/कि.ग्रा.)		100	85.782	53.32
यूआई			100	347.11
इकाई मूल्य(रु/कि.ग्रा.)			100	65.84
कुल मात्रा संबद्ध देश	100	917.49	1482.78	6601.29
अन्य देश	100	20.04	329.48	333.58
कुल आयात	100	174.71	524.80	1413.78
घरेलू बिक्री	100	100.73	107.46	92.99
मांग	100	99.32	136.37	183.84
आयातों में बाजार हिस्सा				
चीनी ताइपेई(%)	17%	91%	23%	49%
यूआई(%)	0%	0%	25%	32%

संबद्ध देश(%)	17%	91%	48%	80%
अन्य देश (%)	83%	9%	52%	20%
कुल (%)	100	100	100	100
मांग में हिस्सा				
संबद्ध देश	1%	11%	6%	26%
घरेलू उद्योग	93%	94%	73%	47%
अन्य देश	6%	1%	14%	10%

(55) उपयुक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि:

- क) संबद्ध देशों से कुल आयातों में वर्ष 1999-2000 से जांच अवधि (वार्षिक) के दौरान उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। उसी अवधि के दौरान आयात कीमत में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।
- ख) भारत में कुल मांग की तुलना में संबद्ध देशों से आयातों में, वर्ष 1999-2000 में 1% के स्तर से जांच अवधि के दौरान 26% तक की अत्यधिक उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जबकि घरेलू उद्योग के हिस्से में 93% से 47% की गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्सम आई गिरावट का र्पतयक्ष कारण संबद्ध देशों से होने वाले पाटित आयात रहे हैं।
- ग) जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित कीमत की तुलना में संबद्ध देशों से आयात कीमतें अत्यधिक कम रही हैं। घरेलू उद्योग द्वारा यह भी दावा किया गया है कि उन्हें पाटित आयातों के कारण कीमतों में कटौती करनी पड़ी है जिसका सीधा प्रभाव उनके लाभों पर पड़ रहा है, तथा उद्योग को अनुचित दामों पर पाटित आयातों के कारण अपने उत्पादों की बिक्री हेतु अत्यधिक परिश्रम करना पड़ रहा है।
- घ) उत्पादन/उत्पादकता तथा क्षमता उपयोग: संबद्ध वस्तुओं की मांग में निरंतर वृद्धि प्रदर्शित हुई है। घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में वर्ष 1999-2000 के दौरान 57% से जांच अवधि के दौरान 91% तक की वृद्धि हुई है। तथापि, क्षमता उपयोग में वृद्धि केवल, निर्यात बिक्री में वृद्धि के कारण हुई है। निर्यात बिक्री में समान अवधि के दौरान **** मी.टन से ***** मी.टन तक की वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उद्योग में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री में वर्ष 2001-02 के दौरान *** मी.टन मी. टन से वर्ष 2002-03 के दौरान *** मी.टन मी. टन की गिरावट आई है।

ड.) पूर्ववर्ती वर्षों में बिक्री की मात्रा के संदर्भ में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योगों की बिक्री में अत्यधिक गिरावट आई है। कुल मिलाकर घरेलू उद्योगों के बाजार हिस्से में अत्यधिक कटौती हुई है, जिससे संबद्ध देशों से आयातों में व्यापक वृद्धि हुई है।

F5. मि. पाठ

(ख) पाटित आयातों का कीमत संबंधी प्रभाव

जांच अवधि 1 अप्रैल 1970

(56) प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है कि क्या पाटित आयातों द्वारा बहुत अधिक कीमत कटौती हुई है अथवा इस प्रकार के आयातों से कीमत में कोई अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती।

मि. पाठ

(57) कीमत कटौती के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए प्राधिकारी ने संपूर्ण जांच अवधि के अंतर्गत जांचाधीन प्रत्येक देश से पाटित आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य की तुलना समान अवधि के लिए घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित सिंगल प्लाय नॉन-एसएसआर नॉन रिफ्लेक्टिव फिल्म के भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति से की है। प्राधिकारी ने 1% उतसर्ग प्रभाव एवं सीआईएफ आयात कीमत हेतु अनुप्रयोज्य मूल सीमाशुल्क को जोड़कर आयातों के पहुंच मूल्य की गणना की है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित कटौती छूट तथा कमीशनों तथा अदा किए जा चुके केन्द्रीय उत्पादन शुल्क को शामिल नहीं किया है।

(क) कम कीमत पर बिक्री: संबद्ध वस्तुओं के लिए अनुमानित भारित औसत प्रतिरहित कीमत तथा पहुंच लागत की तुलना की गई है। निम्नलिखित सारणी में यह दर्शाया गया है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों को घरेलू बाजार में किस सीमा तक कम कीमत पर बेचा जा रहा है।

रूप/मी टन

	यू.ए.ई.	चीनी लाइसेंस
घरेलू उद्योग की अपेक्षित बिक्री कीमत (उत्पाद शुल्क को छोड़कर)	*****	*****
आयातित उत्पाद का पहुंच मूल्य	*****	*****
कम कीमत पर बिक्री की सीमा	*****	*****
कम कीमत पर बिक्री का %	600 से 750%	800 से 900%

(ख) कीमत में कटौती जांच अवधि के दौरान पाटित आयातों की पहुंच कीमत, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है जिससे कीमत कटौती की मौजूदगी का पता चलता है।

रूपए/मी. टन

	यूएई	चीनी ताइपेई
घरेलू उद्योग का एनएसआर	*****	*****
आयातित उत्पाद की पहुंच कीमत (सीआईएफ कीमत + उतराई प्रभार + मूल सीमा शुल्क)	*****	*****
कटौती की सीमा	*****	*****
कटौती का % (क्षेत्र)	400 से 550%	500 से 650%

कीमत कटौती/कम कीमत पर बिक्री के मार्जिन को जांच के अंतर्गत प्रत्येक देश के मामले में उल्लेखनीय पाया गया था।

(ग) कीमत ह्रासकारी प्रभाव

(58) प्राधिकारी नोट करते हैं कि कच्ची सामग्री की लागतों में वृद्धि के कारण उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है। उत्पादन की इकाई लागत की तुलना इकाई बिक्री कीमत के साथ करने पर पता चलता है कि यद्यपि क्षति की अवधि के दौरान उत्पादन की लागत तथा बिक्री कीमत में वृद्धि हुई है, फिर भी जांच अवधि के दौरान बिक्री कीमत में होने वाली वृद्धि, उत्पादन की लागत में वृद्धि से कम थी। इस प्रकार आयातों के कारण घरेलू उद्योग उचित सीमा तक कीमत बढ़ाने में असमर्थ था ताकि बढ़ी हुई उत्पादन लागत को समायोजित किया जा सके, जिससे घरेलू उद्योग की कीमतों पर कीमत ह्रासकारी प्रभाव पड़ रहा था।

(ग) अन्य आर्थिक मानदंड

(59) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति की सीमा की जांच करने के लिए दिए गए सभी संगत आर्थिक मानदंडों की जांच की है। विभिन्न क्षति मानदंडों के विषय में प्राधिकारी द्वारा की गई जांच निम्नानुसार है:

(क) रोजगार: वर्ष 1999-2000 में 180 से जांच अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या 209 तक बढ़ गई है। रोजगार एवं वेतन में सकारात्मक सुधार हुआ है। तथापि, इसे घरेलू उद्योग के महत्वपूर्ण निर्यात क्रियाकलापों तथा उत्पादन में वृद्धि के आलोक में देखा जाना चाहिए।

(ख) लाभप्रदता : यद्यपि कंपनी उन सभी वर्षों में, जिनका क्षति विश्लेषण किया गया है, लाभ कमाती रही है, फिर भी घरेलू बिक्री के संबंध में उनकी लाभप्रदता में गिरावट आई है तथा जांच अवधि के दौरान यह नकारात्मक हो गई है। एन आर सिंगल नॉन - एस आर सी फिल्मों की बिक्री के संबंध में, निरपेक्ष रूप से घाटे में वृद्धि होने के साथ-साथ समान उत्पाद की निर्यात बिक्री की तुलना में भी घाटा हुआ है। यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए घाटे मुख्यतः मारुति जैसी किफायती कार मॉडलों के लिए विशेष रूप से विनिर्मित नॉन-स्फ्लेक्टिव नॉन एस एस आर प्लाई फिल्म के खंड में हुए हैं, जो उसके उत्पादन का सबसे बड़ा हिस्सा (लगभग 87%) है। चूंकि यह खंड को कम बिक्री वाले सीमित बाजार के लिए लक्षित है इसलिए यह उत्पन्न कीमत संवेदनशील है तथा गुणवत्ता का स्तर भी कम है। तथापि, संबद्ध देशों से पाटित आयात द्वारा इस खंड में काफी हद तक बाजार का क्षरण हो चुका है जिसके कारण इस खंड में कंपनी को भारी घाटा होने के साथ-साथ कंपनी की समग्र लाभप्रदता में भी कमी आई है। अन्य खंडों में घरेलू उद्योग अपनी बिक्री एवं पर्याप्त लाभ को कायम रखने में सफल रहा है क्योंकि ये उत्पाद उच्च खरीद क्षमता वाले उपभोक्ताओं की ओर लक्षित हैं जहां गुणवत्ता एवं कीमत का स्तर भी उच्च है।

(ग) लगाई गई पूंजी पर आय (आर ओ सी ई) : जांच की अवधि के दौरान लगाई गई पूंजी पर आय सकारात्मक है परंतु आय अत्यधिक कम प्रतीत होती है (**0%)।

(घ) पाटन के मार्जिन की मात्रा: पाटन का मात्रा यू ए ई तथा चीनी टाईपेई के लिए क्रमशः 390% तथा 448% तक निकाली गई है और इस प्रकार इन्हें उल्लेखनीय पाया गया है।

(ङ.) नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव: नकद प्रवाह एवं लगाई गई पूंजी पर आय में लाभप्रदता की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है, जो इसके पूर्ववर्ती वर्ष में सकारात्मक होने के पश्चात जांच की अवधि में घरेलू बिक्री के पश्चात जांच की अवधि में घरेलू बिक्री की तुलना में पुनः नकारात्मक हो गई है।

(च) वृद्धि: संबद्ध वस्तुओं की मांग में लगातार वृद्धि प्रदर्शित होती है। तथापि कंपनी ने किसी भी प्रकार के अतिरिक्त निवेश नहीं किए हैं तथा इसकी संस्थापन क्षमता पूर्ववत है।

(छ) निर्यात बिक्री: घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री में जांच अवधि के दौरान पर्याप्त वृद्धि प्रदर्शित हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग के निर्यात में वृद्धि इस तथ्य के कारण हुई है कि घरेलू बाजार के बड़े हिस्से पर संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों ने कब्जा कर लिया है।

(ज) माल सूची: घरेलू उद्योग के औसत स्टॉकों में इस अवधि के दौरान वृद्धि हुई है जिससे यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग अच्छी मांग के बावजूद घरेलू बाजार में अपना समूचा उत्पादन उतारने में असमर्थ है।

(झ) उत्पादकता: प्रतिदिवस उत्पादन में उत्पादन स्तर में वृद्धि के अनुरूप बढ़ोतरी हुई है तथापि, उत्पादकता में उक्त वृद्धि मुख्यतः उसके निर्यात कार्यकलाप के कारण हुई है।

(60) पिछले घाटे: प्राधिकारी ने घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग को हुए पिछले घाटके के कारणों की भी जांच की थी। यह पाया गया था कि आवेदक को निम्नलिखित कारणों से पूर्व में वित्तीय घाटा हो रहा था:

1. वित्तीय पुनर्गठन: - आवेदक पहले ब्याज की उच्च दर का सामना कर रहा था जिससे ब्याज लागत का प्रभाव अधिक रहा था। कंपनी द्वारा शुरू किए गए वित्तीय पुनर्गठन से ब्याज लागत में पर्याप्त कमी आई थी। कंपनी की लाभप्रदता पर वित्तीय पुनर्गठन के प्रभाव का आकलन करने के लिए प्राधिकारी ने वर्ष 1999-2001 की अवधि में आवेदक की लाभप्रदता का आकलन किया था। प्राधिकारी यह मानते हैं कि वर्तमान प्रयोजन के लिए यह लाभप्रदता ही संगत लाभप्रदता है, वास्तविक लाभ/हानि ब्याज की उच्चतर दर से प्रभावित हुई है।

2. उत्पादन शुल्क: - आवेदक पूर्व में मूलानुसार 24% की दर से उत्पाद शुल्क अदा कर रहा था। शामिल उत्पाद के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए (उपभोक्ताओं के लिए कोई माडवेट "उपलब्ध नहीं है") आवेदक के द्वारा उत्पाद शुल्क को वहन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। वर्ष 1999-2000 में उत्पाद शुल्क की उच्चतर दर से आवेदक की निवल बिक्री प्राप्ति कम रही थी। तथापि, उसके बाद उत्पाद शुल्क को 24% (1999-00) से घटाकर 16% कर दिया गया था। चूंकि इस मद से संबंधित लागत को घरेलू उद्योग द्वारा वहन किया जा रहा था। इस बात पर विचार करते हुए कि उत्पाद शुल्क के उच्च प्रभाव के कारण 1999-2000 में कंपनी के घाटे को मान्यता उचित नहीं होगा, वर्तमान प्रयोजन के लिए उत्पादन की लाभप्रदता निकालते समय कंपनी के घाटे पर इसके प्रभाव को नकार दिया गया है।

3. संयंत्र का कम उपयोग। - आवेदक इससे पूर्व देश में मांग की कमी के कारण इष्टतम उत्पादन नहीं कर पा रहा था। निर्यात बाजार भी सीमित था। परिणामतः आवेदक का उत्पादन पूर्ववर्ती वर्षों में प्रत्यक्षित उत्पादन की तुलना में कम रहा था। इससे ऊपरी लागत का प्रभाव अधिक रहा है जिसके कारण आवेदक की उत्पादन लागत अधिक रही थी। घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाली इस उच्चतर लागत को विधिसम्मत ढंग से उपभोक्ताओं पर डाला जा सकता था। उत्पादन में वृद्धि होने से घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में सुधार हुआ था। तथापि, यह अल्पकालिक रहा और जांच अवधि में और अब पाटन के कारण निष्पादन की स्थिति पुनः खराब हो गई है।
4. यह उल्लेख करना भी प्रासंगिक होगा कि आवेदक के पास पर्याप्त निर्यात कार्यकलाप हैं जिनकी व्यवहार्यता घरेलू बाजार में आवेदक की व्यवहार्यता पर निर्भर है। आवेदक घरेलू बाजार में बने रहने में समर्थ नहीं होगा जिसका अर्थ यह होगा कि आवेदक को न केवल उत्पादन और घरेलू बाजार में बिक्री से क्षति हुई है बल्कि निर्यात बाजारों में बिक्री से भी क्षति हुई है।

ज.4 घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत का निर्धारण:

- (61) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना के व्यापक विश्लेषण और छानबीन के बाद तथा प्राधिकारी द्वारा सत्यापन के बाद संबद्ध वस्तु की क्षतिरहित कीमत निर्धारित की थी।
- (62) जांच अवधि और पूर्ववर्ती वर्षों के लिए उत्पादन एवं उत्पादन प्रक्रिया से संबंधित सभी संगत कारकों के बारे में लागत संबंधी सूचना निर्धारित प्रपत्र में मांगी गई थी। सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर घरेलू उद्योग के लिए संबद्ध वस्तु की वास्तविक उत्पादन लागत का उपयोग लागत की इष्टतम लागत के निर्धारण हेतु किया गया है। घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत के निर्धारण में प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त कच्ची सामग्री की लागत, उसकी खपत, उपयोगिता लागत अर्थात् बिजली, पानी आदि, ब्याज लागत, श्रम लागत, मूल्य ह्रास लागत तथा बिक्री एवं प्रशासनिक व्यय सहित समस्त संगत कारकों की विस्तृत जांच और उनका विश्लेषण के आधार पर लागत के विश्लेषण में संयंत्र में किए गए निवेश तथा क्षमता उपयोग जैसे कारकों की भी जांच की गई है। इन सभी कारकों का निर्धारण मूल लेखा पुस्तकों तथा उत्पादन एवं वित्तीय विवरणों के संदर्भ में किया गया है। घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित

कीमत का निर्धारण आवेक द्वारा लगाई गई पूंजी पर उचित लाभ मार्जिन को उत्पादन लागत में जोड़कर किया गया है।

- (63) तदनुसार, प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग के लिए भारत औसत क्षतिरहित कीमत *** रु० प्रति किग्रा. निर्धारित की गई है।

ज.5 क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन:

- (64) प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षतिरहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारणार्थ निर्यातों के पहुंच मूल्य से की गई है। संबद्ध देशों से निर्यातों की भारत औसत पहुंच कीमत निम्नानुसार निकाली गई है:

क्षति मार्जिन की गणना रु० प्रति कि.ग्रा.		
	चीनी ताईपेई	यूएई
डीजीसीआईएस आंकड़ों के अनुसार भारत औसत सीएंडएफ कीमत	*****	*****
जमा उतराई प्रभार 1%	*****	*****
आकलन योग्य मूल्य	*****	*****
जमा सीमा शुल्क 30%	*****	*****
भारत औसत पहुंच मूल्य	*****	*****
एनआईपी		*****
पहुंच मूल्य के प्रतिशत के रूप में क्षति मार्जिन	600 से 750%	800 से 900%

झ. कारणात्मक संबंध:

- (65) घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले क्षति संबंधी मापदण्डों और कारकों की जांच करने के बाद प्राधिकारी ने इस बात की जांच की है कि क्या ऐसे कोई अन्य कारण हैं जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो और क्या पाटन को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का सीधा कारण माना जा सकता है। इस संबंध में प्राधिकारी के निम्नलिखित अभिमत हैं—
- (i) घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले विभिन्न मापदण्डों की जांच से यह पता चलता है कि कीमत में अत्यधिक कटौती से बाजार हिस्से में पर्याप्त गिरावट आई है और परिणामतः घरेलू उद्योग की लाभप्रदता, नकदी प्रवाह तथा आर ओ आई में कमी आई है। पाटित आयातों के बाजार हिस्सम, हुई अत्यधिक वृद्धि से घरेलू उद्योग के बाजार हिस्स में गिरावट आई थी, इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग ने वर्ष 2001-2002 तक सकारात्मक

वृद्धि दर्ज करने की बाद बिक्री मात्रा में गिरावट और नकारात्मक वृद्धि दर्ज की थी । अतः यह नोट किया जाता है कि 1999-2000 और 2001-02 के बीच लगातार सुधार होने के बाद जांच अवधि में घरेलू उद्योग का निष्पादन खराब रहा था । जांच अवधिक में घरेलू उद्योग के निष्पादन में उक्त गिरावट बाजार में पाटित आयातों के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप आई थी ।

- (ii) अन्य देशों से आयात उच्चतर कीमतों पर हुए हैं । साथ ही साथ जांच अवधि में उनके हिस्से में गिरावट आई है जबकि 2001-02 तक उसमें वृद्धि हुई थी । अतः अन्य देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति नहीं हो सकती और न ही प्राधिकारी की जानकारी में मात्रा संबंधी ऐसा कोई साक्ष्य लाया गया है कि घरेलू उद्योग को क्षति अन्य देशों से हुए आयातों के कारण हो सकती है ।
- (iii) संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि प्रदर्शित हुई है तथापि घरेलू बिक्री में बढ़ोतरी ऋणात्मक रही है । इस प्रकार उभरते हुए बाजार एवं पर्याप्त क्षमता के बावजूद आवेदक अपनी घरेलू बिक्री को बढ़ाने में सक्षम नहीं है । इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में अत्यधिक गिरावट आई थी जबकि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के बाजार हिस्से में भारी वृद्धि हुई थी । अतः मांग में संभावित गिरावट से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति नहीं हो सकती है ।
- (iv) घरेलू उद्योग विश्व में अनेक देशों को इस उत्पाद का निर्यात कर रहा है । न केवल इसकी निर्यात कीमत अपेक्षाकृत अधिक है, बल्कि मात्राओं में भी वृद्धि हुई है । इसलिए घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन घरेलू उद्योग की वास्तविक क्षति का कारण नहीं हो सकता था ।
- (v) ऑरप्रो कंपनी, यूएई द्वारा यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग को क्षति आवेदक द्वारा अपनायी गई अक्षमत प्रक्रिया के कारण हुई है । तथापि, चूंकि ऑरप्रो का दावा अप्रमाणित तथा बिना किसी सत्यापनीय प्रमाण के है, इस पक्षकार ने प्रकटीकरण के लिए अपने उत्तर में स्वयं का भी खण्डन किया है ।
- (vi) घरेलू उद्योग ने सामग्री का निर्यात यूएई और चीनी ताइपेई सहित विश्व के अनेक देशों को उस कीमत से बहुत अधिक कीमत पर किया है जिस पर सामग्री का भारत में आयात किया गया था । अन्य रसायनों जो लागतों का एक महत्वपूर्ण भाग होते हैं और जिनको संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए जोड़ा जाता है, की कीमत को छोड़कर, वह कीमत जिस पर सामग्री का संबद्ध देशों से भारत को निर्यात किया गया है प्लेन पोलिस्टर फिल्म की कीमत से कम है । इसके अलावा प्लेन फिल्म के संबद्ध वस्तु में परिवर्तन की लागत से भी मूल्य में महत्वपूर्ण वृद्धि आवश्यक होती है । अतः यह नहीं कहा जा सकता है कि घरेलू उद्योग ने तुलनात्मक रूप से अक्षम प्रक्रिया अपनायी है ।

- (vii) मै0 ऑरप्रो द्वारा यह भी तर्क दिया गया है कि गारवेयर पोलिस्टर लि0 को यूएई से भारत में की गई बिक्रियों से वास्तविक क्षति नहीं हुई है और इसके विपरीत, गारवेयर ने लिखित में यह कहा है कि उसे वित्तीय वर्ष 2002-2003 के दौरान अपने सन कंट्रोल फिल्म प्रभाग के उत्त्पादन में वृद्धि होने की उम्मीद है। तथापि प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग अपनी बिक्रियों के एक बड़े भाग का अन्य देशों को घरेलू बिक्री वसूली से बहुत अधिक कीमतों पर निर्यात करता है। अतः आवेदक के निर्यात क्षति का कारण नहीं है।
- (viii) कोई अन्य कारक, जिससे संभवतः घरेलू उद्योग को क्षति पहुंच सकती थी, प्राधिकारी के ध्यान में नहीं लाया गया है।

क्षति संबंधी निष्कर्ष तथा कारणात्मक संबंध

- (66) उपर्युक्त जांच के आधार पर प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि
- संबद्ध देशों से उनके सामान्य मूल्य से अत्यधिक कम कीमतों पर निर्यात की गई संबद्ध वस्तुएं तथा संबद्ध देशों के संबंध में निर्धारित पाटन मार्जिन वास्तविक और न्यूनतम से अधिक है,
 - संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का निर्यात घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत तथा आवेदक की संबद्ध वस्तुओं की औसत बिक्री वसूली से कम कीमतों पर किया गया है, इस प्रकार कम कीमत पर बिक्री और कीमत कटौती की स्थिति उत्पन्न हुई,
 - संबद्ध देशों से आयात की गई वस्तु के कीमत ह्रास और कीमत मंदी प्रभावों के कारण घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तु के लिए लाभकारी कीमत प्राप्त करने में अक्षम रहा है,
 - घरेलू उद्योग ने संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण क्षति उठायी है। संबद्ध देशों से पाटित कीमतों पर आयातों की मात्रा तथा कीमतें घरेलू उद्योग की क्षति के लिए जिम्मेदार हैं,
 - पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग द्वारा उठायी गई क्षति की बीच एक स्पष्ट कारणात्मक संबंध है और अन्य कारकों से हुई क्षतियां घरेलू उद्योग द्वारा उठायी गई क्षति के लिए जिम्मेदार नहीं हैं।

ट. भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

(67) प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद एक ऐसा उत्पाद है जिसका ग्राहकों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रयोग किया जाता है और इसे किसी महत्वपूर्ण सीमा तक आगे प्रसंस्कृत नहीं किया जाता है। सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में ऐसी खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः लाया जा सके जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपायों को लागू करने से संबद्ध देश से आयात किसी भी तरीके से प्रभावित नहीं होंगे और इसलिए ग्राहकों के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

ठ. निष्कर्ष

(68) उठाये गए मुद्दों और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों तथा हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध के जरिये या अन्यथा प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों, जैसाकि उपर्युक्त जांच परिणामों में रिकार्ड किया गया है, की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि:

- i) संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है।
- ii) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है, और
- iii) घरेलू उद्योग को क्षति संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मात्रा तथा कीमत प्रभाव दोनों के कारण हुई है।

ड. सिफारिशें

- (69) इस निष्कर्ष पर पहुंचने के पश्चात कि संबद्ध देशों से पाटन के कारण समान उत्पाद घरेलू उद्योग को क्षति हुई है और पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध स्थापित करने के पश्चात प्राधिकारी संबद्ध वस्तु के आयातों पर नीचे उल्लिखित विधि तथा ढंग से पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करना आवश्यक मानते हैं।
- (70) प्राधिकारी द्वारा अनुसरण किए गए कम शुल्क संबंधी नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी का यह विचार है कि इस मामले में पाटन मार्जिन के समान या उससे कम पाटनरोधी शुल्क उपयुक्त होगा जिससे घरेलू उद्योग की क्षति दूर होगी। तदनुसार प्राधिकारी पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए पाटन मार्जिन के समान निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।
- (71) घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि इस मामले में नियत शुल्क के रूप में पाटनरोधी शुल्क रूपया आधार पर लगाया जाए। तथापि, उत्पाद के स्वरूप पर विचार करते हुए प्राधिकारी का यह विचार है कि पाटित आयातों के प्रभाव को निष्प्रभावी बनाने के लिए संदर्भ कीमत आधार पर पाटनरोधी शुल्क लगाना उपयुक्त उपाय होगा। तदनुसार यह सिफारिश की जाती है कि चीनी ताइपेई और यूएई के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी ग्रेडों पर इस जांच परिणाम के साथ संलग्न शुल्क तालिका के कॉलम (9) में उल्लिखित राशि तथा भारत में आयात के पश्चात आयातों के पहुंच मूल्य के बीच के अन्तर के समान निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए।
- (72) इस प्रकार अनुशंसित निश्चयात्मक शुल्क नियम 20(2)(क) के अनुसार अनंतिम शुल्क लगाने की तारीख से भूतलक्षी प्रभाव से वसूला जाएगा।

- (73) उपर्युक्त के अधीन प्राधिकारी दिनांक 25 जुलाई, 2003 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

ट. आगे की प्रक्रियाएं

- (74) इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील इस अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।
- (75) प्राधिकारी इस निश्चयात्मक उपाय को जारी रखने, इसमें परिवर्तन करने या इसको समाप्त करने, जैसा इसमें अनुशंसित है, की आवश्यकता की इस अधिनियम के संगत प्रावधानों और इस संबंध में समय-समय पर जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं। प्राधिकारी द्वारा ऐसी समीक्षा के लिए कोई भी अनुरोध स्वीकार नहीं किया जाएगा यदि यह अनुरोध किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय सीमा के भीतर नहीं किया जाता है।

अभिजित सेनगुप्त, निर्दिष्ट प्राधिकारी

शुल्क तालिका

क्र. सं.	सीमा शुल्क उप-शीर्ष	माल का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	संदर्भ कीमत	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	39206	सन/डस्ट कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म	कोई विनिर्देशन	चीनी ताईपेई	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक		प्रति कि.ग्रा	अम. डा.
2	39206	सन/डस्ट कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म	कोई विनिर्देशन	यूएई के अलावा कोई देश	चीनी ताईपेई	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक		प्रति कि.ग्रा	अम. डा.
3.	39206	सन/डस्ट कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म	कोई विनिर्देशन	यूएई	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक		प्रति कि.ग्रा	अम. डा.
4.	39206	सन/डस्ट कंट्रोल पोलिस्टर फिल्म	कोई विनिर्देशन	चीनी ताईपेई के अलावा कोई देश	यूएई	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक		प्रति कि.ग्रा	अम. डा.

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 30th July, 2004

Final Findings

Sub: Anti-Dumping Investigation concerning Imports of Sun/Dust Control Polyester film originating in or exported from UAE and Chinese Taipei.

No. 14/53/2002-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 (herein after referred to as Act) as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (herein after referred to as Rules), thereof:

A. Initiation

(1) The Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the Applicant M/s Garware Polysters Ltd. on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 3rd March 2003, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of Specialty Polyester Films/ Sun Control Films (herein after referred to as subject goods and also sun films) classified under Customs Code 392069 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995, originating in or exported from (UAE and Chinese Taipei (herein after referred to as the subject countries) in accordance with the sub-Rule 5(5) of the Rules referred above.

(2) Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2002 to 31st December 2002 i.e. the period of investigation (POI).

(3) The Preliminary findings of the Authority were notified on 25th July 2003. Acting upon the recommendations of the Authority, Central Government imposed provisional duty on the subject goods imported from the countries named above vide notification No. 133/2003 Dated 26.08.2003.

B. Further Procedure

(4) Procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the public notice notifying the preliminary findings of the Authority:

- (i) The Authority provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 31st October, 2003. The parties presenting their views were requested to file written submissions of the views expressed.
- (ii) Written submissions made by the parties to the investigation, after the public hearing, has been examined by the Authority in appropriate manner.
- (iii) The Authority issued a disclosure statement on 29.06.2004 in accordance with the Rule 16 of the Rules supra, containing general disclosures and confidential disclosures to respective parties and giving methodology of determination and the essential facts of the case on which Authority would base its decision.
- (iv) Comments to the disclosure statement received from the interested parties have been appropriately dealt with by the Authority in this finding.
- (v) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained for this purpose and kept it open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).
- (vi) **** In the Notification represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by Authority under the Rules.
- (vii) For the purpose of brevity the issues already discussed in the preliminary findings of the authority are not repeated here.

C. Product under Consideration and Like Article

(5) Product under consideration for which the investigation was initiated in the present case is, "Specialty Polyester Film i.e. Sun / Dust Control Polyester Film, also known by different names in the trade and market parlance such as Sun Control Films, Sun Films, Solar films, Solar Control Films, Solar Window Films, Window Films". The product is largely used for heat rejection/glare reduction, U.V. rejection, and safety, by applying on window glasses of automobiles as well as buildings, etc. The ITC (HS)-classification of the products is 392089.04. The Authority has examined the issue of product under consideration and like article for various determinations in this investigation as follows:

C.1 Applicant's views

(6) Applicant has, in its various submissions before the Authority, submitted that; Sun control films are broadly categorized as follows:-

- Non-reflective films: standard sun control film with different shades, available in different degree of light transmission.

- **Reflective or semi-reflective films:** these are sun control films with a metallised coating/ metallised film lamination. The metallization helps in rejecting higher degree of solar heat.
- **Matte films:** these are films with a matte finish, which ensures that the transmitted light gets diffused. They are also called privacy films.
- **Safety films:** these are thicker films used for protecting the glass from splintering due to accidental breakage. They may be clear or with coloured shades.

(7) They have further submitted that whatever be the types, subject goods with adhesive coating would invariably have lamination with another film. This lamination is done with the release liner and is removed before end application. The adhesive on the subject good helps in sticking the film to the glass.

(8) The process of manufacturing of the subject goods involves Production of Dyed Film from Plain Polyester Film, Siliconizing on the Plain Polyester Film (Liner), Scratch resistant coating on the dyed polyester film, Metallisation on Plain Polyester Film (for reflective / semi reflective films), Lamination of metallized film with dyed polyester film with thermosetting adhesive, Lamination of release liner – the adhesive is applied on the dyed/metallized film and then laminated with Silicon release liner, Slitting and Quality Control.

(9) The Applicants further contend that there is no known difference between the product exported from Chinese Taipei and UAE and the product supplied by the Applicant. There is no known difference between the production process employed by the Applicant and the producer in the subject countries. Therefore, subject goods produced by the Applicant are 'like article' to the goods imported from Chinese Taipei and UAE, within the meaning of the term with reference to the anti-dumping Rules.

C.2 Views of the Exporters and other interested parties

(10) None of the exporters from the subject countries have responded to the initiation notification, except M/s Orpro, UAE, who submitted a limited response to the initiation. However, M/s ORPRO has submitted that they have not exported the subject goods to India and hence their name should not figure as exporter in the investigation. It has been further argued by M/s.Orpro that the goods produced by the domestic industry and by the Foreign Producers employ different production process which affects their cost.

C.3 Examination by the Authority:

(11) The Authority notes that product under consideration in the present investigation is Specialty Polyester Film i.e. Sun / Dust Control Polyester Film originating in or exported from Chinese Taipei and UAE. The Authority also notes that the Applicant company manufactures Sun/ Dust Control Polyester Films of various grades which are used for reducing the heat/light transmission through the motor vehicle windows and house windows. The films are applied to the inner side of the glass windows and its main function is to reduce the solar heat, ultra violet light and glare that normally would enter through the windows. This film also provides increased shatter resistance. The product is described by several names in the

commercial parlance and the Applicant has included all types of sun control films within the scope of this investigation.

(12) The Authority has, in its preliminary findings included all types of sun control films within the scope of the investigation and held that the imported films are like product to the product manufactured by the domestic industry within the meaning of the term in terms of the Rules.

(13) It has been argued by M/s.Orpro that the goods produced by the domestic industry and by the Foreign Producers employ different production process. The Authority, however, finds that while none of the producers in the subject countries responded to the Authority, the above exporter provided no data/information either in the prescribed format or in support of its claim of different production process. In its response to the disclosure statement filed through M/s Little and Co., M/s Orpro Company, LLC UAE, has reiterated its position and have reconfirmed that they are neither the producer nor exporter of the subject goods to India. But elsewhere in the same submission they have contradicted themselves by stating that " it is reiterated that the production process used by Orpro is much more efficient than one employed by the domestic industry". Therefore, not only their submissions are doubtful, their very status in the country of exports is also not clear. In view of the above the Authority holds that the respondent does not have a *locus standi* in this case as an interested party and all their submissions in respect of the like article and cost/price difference has no relevance in this case.

(14) The Authority has examined the production process used by the Applicant Company for manufacturer of the sun control polyester films and finds that the process of manufacturing involves manufacturing of plain polyester film from DMT and EMG, through extrusion process. As an alternative plain polyester films can also be used as the base film. The polyester film is further processed by way of colour dyeing, siliconising, scratch resistance coating, metallization, lamination, etc depending upon the number of layers required for providing reflective or other properties and providing silicon coated release liner for providing protective layer to the adhesive surface of the film. This being the basic and most common method of manufacturing the films, the argument of M/s Orpro does not seem to hold much ground. Claim of Orpro is with reference to possible differences in the cost of production, which can, at best, have impact on assessment normal value. However, in view of the clear position taken by M/s Orpro about its non-involvement either in the production or exports of subject goods to India, the arguments raised by it in this respect has no relevance.

(15) The Authority notes that the cost of basic raw material i.e. polyester film in the international market ranged between 2 to 2.5 US\$ per Kg during the POI, which exceeds the import price of the finished sun control films as per the import data available with the Authority. Therefore, the argument of cost difference due to different production process does not seem to have any strength

(16) The issue before the Authority is, whether the imported films from the subject countries are like products compared to the domestic product. The Authority notes that the guiding principle in this respect is the physical and chemical characteristics and usage of the products and their commercial and technical substitutability. In this connection the Authority finds that though there is variety of grades of the sun control films manufactured by the domestic industry, and also imported from the subject countries, the basic material and the

production process is same. Starting from single ply non-reflective and non-scratch resistant films to double/triple ply, reflective and scratch resistant films, the films vary in sun control property, scratch resistance property and also have incremental processing and consequential incremental price differentiation. This being a direct consumer product, the use of one grade against another depends on the price consideration and perception of the consumer, as all the grades can be used interchangeably.

(17) Rule 2(d) of the Anti-Dumping Rules specifies that "Like Articles" means an Article which is identical or alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an Article, another article, having characteristics closely resembling those of the articles under examination.

(18) In the present investigation none of the opposing interested parties have raised any issue with regard to the Like Article. Even though Orpro claimed that the Foreign Producers employ a different production process, in view of the stand taken by this party that they are neither the producer nor the exporter of the subject goods to India, their submissions have no relevance in this case. The Authority finds that the goods produced by the domestic industry are like article to the goods exported from the subject countries, on the basis of technical and commercial substitutability of the product.

(19) Accordingly the Authority holds that Sun/Dust Control Polyester Films being produced by the domestic industry are like article to the goods being imported from the subject countries, irrespective of their trade or commercial names, within the meaning of the Rules.

D. Standing of the Domestic Industry

(20) The applicant has been filed by M/s. Garware Polyester Ltd., Mumbai and is the sole producer of the subject goods in the country. The applicant accounts for 100% of the domestic production during the period of investigation of the subject goods in India. The Authority confirms that the Applicant fulfils the requisite criteria to represent the domestic industry, as required under Rule 5(a) and (b) and Rule 2(b).

E. De Minimis Limits

(21) The exports from Chinese Taipei and UAE constitute about 49% and 32% respectively, of total imports of the like article and are above the de minimis level for the purpose of the above investigation.

F. Other issues raised

(22) M/S ORPRO Company LLC, Sharjah, United Arab Emirates in its limited response made the following submissions:

- that they are neither the producer nor the exporter of the dumped goods .
- that they carry on the business as a trader of the dumped goods within the UAE and not as an exporter thereof to India.

- That they have sold goods in question within UAE to a company called Perfect Trading Company who in turn has shipped goods to the customers in India.
- That for the reasons indicated above enquiry against alleged dumping of the goods in India has been misconceived and misdirected. Therefore, the investigation against them should be discontinued and dropped.

(23) The Authority notes that M/s Orpro is, admittedly neither a producer nor an exporter of the subject goods to India, nor has it made a detailed response in this regard, which can be taken into account for deciding the matter. In view of the position taken by this party the Authority holds that they are not an interested party in this case and their submissions have no relevance in this case. Authority also notes that the investigation was not initiated against any specific party. M/s Orpro has made its limited submission on its own and at the same time claimed its exclusion as they neither produce nor export the subject goods to India.

(24) The Authority further notes that no other substantive or general issue has been raised by any party in connection with this investigation and therefore, proceeds with the determination on the basis of the facts available with it in terms of paragraph 1 of Annexure-II of Antidumping Agreement.

G. Determination of Dumping Margin

(25) Under Section 9A (1)(c), normal value in relation to an article means:-

- (i) "The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section(6); or
- (ii) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-
- (iii) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (iv) The cost of production of the same article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);
- (v) Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin."

(26) The Authority provided opportunity to the exporters from subject countries to furnish information relevant to the investigations and offer comments, if any, in accordance with the Rules cited above. The Authority wrote to the Embassies/High Commissions/Representatives of subject countries in India also.

(27) None of the exporters from the countries named in the initiation notification have responded and provided any information in respect of the normal value of the product in the countries of export and their export price to India. Only M/s. Orpro, UAE made a very limited submission while admitting that they have not exported the product to India have argued that the domestic industry and the foreign producers employ different production process. This claim is however, not substantiated with any evidence of the process and cost of manufacturing of the product by the producers in the country of export.

(28) The Authority therefore, constructed the normal value of the products on the basis of facts available. The Authority found that the process of manufacturing of the films involves using plain polyester film (made out of polyester granules from DMT and MEG) as the base film and is processed further by way of siliconising, scratch resistance coating, metallization, lamination, etc. For arriving the cost of manufacturing the Authority relied on the Standard Input-Output Norms (SION) published by Directorate General of Foreign Trade and the international prices of the relevant raw materials and the processing cost based on best available information, including that provided by the domestic industry in terms of paragraph 1 of Annexure II of Antidumping Agreement.

G.1 NORMAL VALUE (Chinese Taipei)

(29) As far as normal value in Chinese Taipei is concerned the applicant has argued that they have substantial exports of the same product to Chinese Taipei. The applicant has argued that the price at which the goods have been imported in Chinese Taipei represents the price at which goods have been purchased in Chinese Taipei for consumption and must be considered comparable to the price at which goods must be sold in Chinese Taipei. Therefore, this price should represent the normal value on the basis of their export price to Chinese Taipei, by estimating all the expenses upto arrival of the goods in Chinese Taipei. The Authority notes that this argument has considerable force. The product exported by the Applicants to the same country from which dumping has been alleged enters the commerce of that country at a price which would be a reasonable estimate of the normal value in that country. However, Authority also proposes to estimate the normal value on the basis of constructed value method and adopt the most conservative method, even if there is no cooperation from any interested party in this case.

(30) The Authority notes that sun control films manufactured and sold by the domestic industry are of various types and the cost of different types vary according to the number of plys of films used, and types of coating used. The prices of the product also vary depending upon the above characteristics as well as consumer perception of price. While it is possible that various types of Sun films might have been imported from the subject countries during the POI, it is not possible to segregate the same due to total non-cooperation of the exporters from the subject countries. More over, examination of the prices of the subject goods imported from the countries named, as reflected in the import data available with the Authority indicates that average price is as low as Rs 67/- per Kg which does not seem even to cover the cost of the basic raw material i.e Polyester films. In this connection the Authority

refers to the international prices of 12 micron Polyester films as reported in the Quarterly Business Report of Polyester Films for various quarters in 2002-03, which indicates the price varied between US\$2 to US\$2.5 PER Kg during the POI. Therefore, the Authority is of the view that the type-wise or grade-wise comparison of the products for the purpose of the dumping margin calculations is meaningless in a situation like this. Again considering the level of cooperation by the concerned parties, and the data available with the Authority, the Authority adopted most conservative estimates of normal value in order to ensure fair comparison, by resorting to lowest possible estimates of normal value based on the most basic product i.e. Single ply non-scratch resistant and non-reflective films.

(31) The normal value assessed on two alternate basis have been compared and assessment of normal value on the basis of estimates of cost of production appears to be more conservative and reasonable. Under the circumstances, as explained above, normal value has been based on estimates of cost of production with reasonable addition for selling, general, administration costs and profit in accordance with Rules 6(8) supra. However, level of trade adjustments on variable selling expenses has been allowed on the constructed normal value to rationalize it. Accordingly, the Normal Value of Sun/Dust Control Polyester Film for all exporters from Chinese Taipei has been constructed as Rs**** (US\$ ***) per Kg at the exchange Rate of Rs48.44=US\$1.00

G.2 NORMAL VALUE (UAE)

(32) The Authority notes that none of the exporters/producers from UAE have provided any response or information on the normal value as per the prescribed questionnaire. The Authority therefore, holds that none of the exporters from UAE has cooperated with the Authority as envisaged under the Rules. The Authority also notes that the Applicant has exported a small quantity of the subject goods to UAE, but that does not represent a reasonable quantity for assessing the normal value in UAE as explained in the earlier section.

(33) Under the circumstances, the Authority has constructed the normal value based on estimated cost of production with reasonable profit of Sun Dust Control Polyester Film in UAE as per the best available information available under the Rules 6(8) supra. The same principles including the level of trade adjustments as explained in the earlier section have been applied in the case of UAE also. Accordingly, the Normal Value of Sun/Dust Control Polyester Film for all exporters from UAE has been determined as Rs**** (US\$ ***) per Kg at the exchange Rate of Rs48.44=US\$1.00

G.3 EXPORT PRICES

(34) None of the exporters from Chinese Taipei and UAE or importers in India has submitted details of export price in reply to the Questionnaire. Even though Orpro responded to the notice of initiation and admitted having sold some material to Perfect Trading, neither Orpro nor Perfect Trading provided any information with regard to their exports to India.

(35) Applicant has provided information on imports on the basis of actual imports, as reported by private data providing agency, (transaction wise information on imports, as compiled and provided by M/s. INFORMANT, MUMBAI). However, during the course of investigations, the Authority requested relevant information from the DGCI&S, who provided transaction wise details of imports made from the subject countries, including Chinese Taipei,

in the investigation period. The information so provided was examined in detail and volume and value of imports assessed on this basis. In the absence of actual export price from the exporters, the Authority has adopted this information for assessment of the export price from the countries involved.

(36) The Authority has worked out the weighted average export price of all comparable transaction in respect of imports from the subject countries to arrive at the CIF export price to India. The export price so assessed, being the CIF export price, adjustments towards ocean freight, insurance and commission totalling to US\$ ***/Kg based on the facts available, have been considered in view of complete non cooperation by the concerned exporters.

(37) Accordingly the Ex-factory export price in the Period of Investigation thus works out as follows:

Chinese Taipei

CIF Price of imports from Chinese Taipei	Rs****/Per Kg	US\$*** Per Kg
Adjustments		US\$*** Per Kg
Ex-Works export price from Chinese Taipei		US\$*** Per Kg

UAE

CIF Price of imports from UAE	Rs****/Per Kg	US\$*** Per Kg
Adjustments		US\$*** Per Kg
Ex-Works export price from UAE		US\$*** Per Kg

G.4 DUMPING MARGINS

(38) The rules relating to comparison of export price to the normal value of the subject goods in the country of exports provides as follows:-

(39) "While arriving at margin of dumping, the Designated Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sales, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability"

(40) In terms of the above Rules the authority carried out comparison of weighted average ex-factory normal value with the weighted average ex-factory export price for evaluation of dumping margin.

(41) As indicated earlier, in view of the lack of cooperation, the normal values of the subject goods in both the countries named have been constructed on the basis of best available information based on the lowest grade of the product. This value has also been adopted as the weighted average ex-factory normal value for the purpose of determination of dumping margin. The weighted average ex-works export price has also been estimated on the basis of DGCI&S import data with admissible adjustments as stated earlier. The Authority thus

considers that the comparison of normal value with the export price is fair within the meaning of Annexure I to the Rules.

(42) Accordingly, the dumping margins for the producers/exporters of the subject goods in the subject countries have been determined as under:-

COUNTRY-WISE EXPORTERS/ PRODUCERS	NORMAL VALUE (\$/MT)	EXPORT PRICE (\$/MT)	DUMPING MARGIN	DUMPING MARGIN (%)
<u>UAE</u> All Exporters	***	***	***	390%
<u>CHINESE TAIPEI</u> All Exporters	***	***	***	448%

(43) The dumping margins so assessed are above the de-minimus limits and are considered significant.

(44) The Applicant Company, in its response to the disclosure statement, submitted that the dumping margin has been significantly altered between the preliminary findings and the disclosure statement in respect of Chinese Taipei and requested that the normal value should be reconsidered in respect of Chinese Taipei. However, the Authority notes that the normal values in both the countries have been constructed on the basis of best information available and the basis of determination of normal value has already been disclosed to the parties. As far as the export price is concerned the earlier determination was based on secondary data, which has now been worked out on the basis of DGCI&S data. Accordingly the Authority confirms its findings on dumping margin determination as above.

H. INJURY DETERMINATION

H.1 Views of domestic industry

(45) The applicant in its application has submitted: -

- that there is a very significant increase in the imports of the subject goods from the subject countries. The imports have increased in absolute terms and the increase is significant and material;
- that the imports have increased significantly from Chinese Taipei / UAE in relation to imports of the product in India;
- that the imports have increased in relation to production of the domestic industry in India

- (d) that the imports have increased in relation to demand of the subject goods in India;
- (e) that as a result of increase in imports, the sales of the domestic industry have declined.
- (f) that the production of the domestic industry, which had been increasing till 2001-02 declined in the period of investigation.
- (g) that it should also be seen that the domestic industry has significant export activities. Thus, increase in production till 2001-02 is due to higher export volumes. The domestic sales of the domestic industry have declined in period of investigation when compared to previous years;
- (h) that the sales volumes in the domestic market of the Domestic Industry, which has been increasing till 2001-02, declined in investigation period. Due to dumping of subject goods from subject countries, the domestic industry has not been able to increase its sales in spite of increase in demand of product in India.
- (i) That should the dumped imports from subject countries continue, the domestic industry would loose further sales, as in spite of reducing prices, the imports are significantly undercutting the prices of the domestic industry
- (j) that the price at which subject goods are being imported is ridiculously low. The extent of price undercutting is unprecedented and is high.
- (k) that the Domestic Industry is making financial losses from the sales in the domestic market.
- (l) that the price at which the imports have been made have serious suppressing / depressing effect on the prices of the Domestic Industry.
- (m) that the Domestic Industry has been forced to reduce the prices below the cost of production as a result of significant dumping in the country. The financial situation of the Domestic Industry has deteriorated significantly. The Domestic Industry has been forced to a situation of significant financial losses from a situation of profit.
- (n) that the price at which the material has been exported to India is far below the raw materials cost associated with production of the subject goods.
- (o) that the price at which material is being exported is even below the price at which plain polyester film is being imported.
- (p) that considering the normal value and export price the dumping margin is not only significant but also substantial.
- (q) that the landed price of imports after charging prevailing level of customs duties is significantly below the selling price of the domestic industry. Thus, the domestic

industry is facing severe price undercutting. As a direct result, the domestic industry has lost significant sales volumes;

- (r) that the landed price of imports is significantly below the non-injurious price of domestic industry causing price underselling
- (s) that the selling price of domestic industry is below the non-injurious price of the domestic industry. The imports are thus resulting in price underselling in the market.
- (t) that the price at which material is being imported do not permit recovery of even raw material cost, leave aside other variable cost. The domestic industry can not even think to match the price of imported material.
- (u) That in spite of very competitive pricing, the company is losing volumes, rather than increasing the same, due to unfairly priced dumped imports.
- (v) that in spite of reduction in production, the domestic industry is faced with increasing inventory levels.
- (w) that even when the demand for the product has been growing and is positive, the growth of the company in the domestic market has been negative due to dumped imports.
- (x) that volume and value of imports from other countries are either de-minimis or the prices are significantly higher. Imports from other countries are not causing injury to the domestic industry.

H.2 VIEWS OF OTHER INTERESTED PARTIES

M/S ORPRO Company LLC (Orpro), Sharjah, United Arab Emirates.

(46) M/s Orpro has submitted that Garware Polyester Limited (Garware) has not suffered material or injury by the sales made into India from the UAE. On the contrary, Garware has gone on record to say that it expects to increase the turnover of its sun control film division to Rs.50 Crores during the fiscal year 2002-2003. The party has submitted that under Rule 11 of the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (the "Anti Dumping Rules"), the Designated Authority must record a finding that the import of the Dumped Goods into India causes or threatens a material injury to any established industry in India. Under Rule 11(2) of the Anti Dumping Rules, the Designated Authority is required to take into account all relevant facts including the volume of Dumped imports, their effect on the price in the domestic market for Like Articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles and in accordance with the principles set out in Annexure 2 to the Anti Dumping Rules.

(47) It has been submitted by M/s Orpro that point (iv) of Annexure II is very significant because it required the Designated Authority to evaluate all relevant economic factors and indices having a bearing on the State of the industry, including natural and potential decline in the sales, profits, etc. It has been argued by this party that there has been no such natural

or potential decline in the sales or profits in the Sun Control Film Division of Garware. It has been submitted that at paragraph 16(b)(2) of the Preliminary Findings, the Authority has noted that effective production of the subject goods has increased significantly. At paragraph 16(b)(3) of Preliminary Findings the Authority has found that the capacity utilization of the domestic industry has increased as a result of the increase in the production. Therefore the Government of India has failed to note that notwithstanding the allegation of dumping, the profits and turnover of Garware have significantly increased and that therefore, it should have held that Garware has not suffered any material injury as a result of such dumping.

H.3 Determination by the Authority:

H.3.1 CUMULATIVE ASSESSMENT OF INJURY

(48) Annexure II (iii) under Rule 11 supra further provides that "in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti Dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual country is less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and cumulative assessment of the imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles".

(49) The Authority considered the following for examining the issue of cumulative assessment of injury and observed that:

- i) The margins of dumping from each of the subject countries are more than the limits prescribed.
- ii) The volume of imports from each of the subject countries is more than the limits prescribed.
- iii) The domestic product and product supplied by producers in various countries are like articles.
- iv) Imported products and domestically produced subject goods are interchangeable and are being interchangeably used. Transaction wise information on imports from various countries shows that the imports are primarily being made by traders who have purchased the material for reselling. Goods supplied by the two countries were, therefore, competing in the same market.
- v) Products supplied from the subject countries are being marketed in India during the same period through comparable sales channels and under similar commercial conditions.
- vi) Imports from each of the subject countries have increased.

- vii) The domestic producer and exporters in the subject countries are selling the product to the same category of consumers.
- viii) Imports from both the countries are significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market.

(50) The Authority holds that cumulative assessment of injury is appropriate in this case since the exports from the subject countries were directly competing amongst themselves as well as with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market.

H.3.2 Examination of Injury Parameters:

(51) Under Rule 11 supra, Annexure –II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, “.... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....” In considering the effect the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

(52) For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilization, sales quantum, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been proposed to be considered in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

(53) All economic parameters affecting the Domestic Industry as indicated above, such as, production capacity utilization, sales volume etc. have been examined as under:-

(A) Volume effect of Imports

(54) On the basis of information/ data provided by DGCI&S, Calcutta the volume of imports of the subject goods and its effect on the domestic industry has been analyzed as follows:

Particulars	Indexed data			
	1999-2000	2000-2001	2001-2002	2002-03
In Kgs	Volume	Volume	Volume	Volume
Imports				
Chinese Taipei	100	917.49	712.98	3998.62
Unit Price (Rs/Kg)		100	85.782	53.32
UAE			100	347.11
Unit Price (Rs/Kg)			100	65.84
Total Volume Subject Countries	100	917.49	1462.78	6601.29
Other Countries	100	20.04	329.48	333.58
Total Imports	100	174.71	524.80	1413.78

Domestic Sales	100	100.73	107.46	92.99
Demand	100	99.32	136.37	183.84
Market share in Imports				
Chinese Taipei(%)	17%	91%	23%	49%
UAE(%)	0%	0%	25%	32%
Subject Countries (%)	17%	91%	48%	80%
Other Countries (%)	83%	9%	52%	20%
Total (%)	100	100	100	100
Share in demand				
Subject Countries	1%	11%	6%	26%
Domestic industry	93%	94%	73%	47%
Other Countries	6%	1%	14%	10%

(55) It is observed from the above data that:

- a) Total Imports from the subject countries has increased substantially from 1999-2000 to the period of investigation (annualized). At the same time import price has shown, a falling trend during the same period.
- b) Imports from the subject countries in comparison to the total demand in India have increased phenomenally, from a level of 1% in 1999-2000 to 26% during the POI, whereas the share of the domestic industry has declined from 93% to 47%. The loss of market share of the Domestic Industry has directly been taken over by the dumped imports from the subject countries.
- (c) The import prices from the subject countries are very low as against the price offered by domestic industry during the period of investigation. It has also been claimed by the Domestic Industry that they had to reduce their prices due to the dumped imports directly affecting their profits and that the industry is fighting hard to sell its products against the dumped imports at unfair prices.
- (d) **Output/Productivity & Capacity Utilization:** The demand for the subject goods has shown steady growth. The capacity utilization of the Domestic Industry has increased from 57% during the year 1999-2000 to 91% during the period of investigation. However, the increase in capacity utilization is solely on account of increase in export sale. Export sale have increased during the same period from **** MT to ***** MT whereas the sales of the subject goods in the Domestic Industry has declined from ***** MT during 2001-02 to ***** MT during 2002-03.
- (e) Sale of the domestic industry has declined substantially during the POI with reference to the volume of sales in the previous years. There is also a drastic reduction in the market share of the domestic industry in the total demand, which has been taken over by the imports from the subject countries to a very large extent.

(B) Price effect of Dumped Imports

(56) The effects of the dumped imports on prices of the domestic industry, has been assessed by the Authority by analyzing whether there has been a significant price

undercutting by the dumped imports or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

(57) In order to assess price undercutting effect, the Authority compared the weighted average landed value of dumped imports from each of the countries under investigation, over the entire period of investigation, to the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period for the single ply non-SSR non-reflective films. The Authority calculated the landed value of imports by adding 1% landing charges and the applicable basic customs duty to the CIF import price. In determining the net sales realization of the domestic industry, the Authority excluded rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid.

(a) **Price Underselling:** A comparison of the weighted average Non Injurious Price assessed for the subject goods and the landed cost has been made. The following table shows the extent to which the dumped imports from the subject countries are underselling in the domestic market:

Rs/MT

	UAE	Chinese Taipei
Desirable Selling Price of Domestic Industry (Excluding Excise Duty)	*****	*****
Landed Value of Imported product	*****	*****
Extent of Underselling	*****	*****
% Underselling	600 to 750%	800 to 900%

(b) **Price Undercutting:** The landed value of the dumped imports is below the selling price of the domestic industry during the period of investigation, showing the existence of price undercutting.

Rs/MT

	UAE	Chinese Taipei
NSR of Domestic Industry	*****	*****
Landed Value of Imported product (CIF price+ landing charges + basic customs duty)	*****	*****
Extent of Undercutting	*****	*****
% Undercutting (range)	400 to 550%	500 to 650%

The margin of price undercutting/ underselling were found to be significant in the case of each of the countries under investigation

(c) **Price Suppression Effects**

(58) The Authority notes that there is a rise in the cost of production due to increase in the raw material costs. Comparison of unit cost of production with unit selling price shows that whereas both the cost of production and selling price increased over the injury period, the

increase in the selling price in the investigation period was less than the increase in the cost of production. The imports were thus preventing the domestic industry from effecting legitimate price increases to accommodate the rise in cost of production, thereby having a price suppression effect on the domestic industry's prices.

(C) Other Economic parameters

(59) The Authority has examined all the relevant economic parameters as laid down to examine the extent of injury suffered by the domestic industry. The findings of the Authority on various injury parameters are as follows:

(a) **Employment:** The number of employees has increased from 180 in the year 1999-2000 to 209 during the period of investigation. Employment and wages shows positive improvement. However, this has to be seen in the light of significant export activities of the domestic industry and increase in production.

(b) **Profitability:**

Though the Company has been making profit in all the years for which injury analysis has been done, its profitability on the domestic sales has declined and become negative during the POI. On the sales of INR Single Ply Non-SRC films the loss has increased in absolute terms as well as in comparison to the export sales of the same product. It is noted that the loss incurred to the domestic industry is mostly in the segment of non-reflective non-SRC single ply films targeted for economic car models like Maruti and which constitutes the largest proportion (about 87%) of its production mix. This segment being targeted at the low-end market, is extremely price sensitive and also perception of quality is low. Therefore, the dumped imports from the subject countries have been able to erode the market substantially in this segment inflicting severe loss to the company in this segment as well as overall profitability of the company. In the other segments the domestic industry has been able to retain its market and reasonable profit because these products are targeted at higher-end consumers, where quality and price perceptions are higher.

(c) **Return on Capital Employed (ROCE):** The Return on Capital Employed is positive during the period of investigation but the return appears to be very low (**%).

(d) **Magnitude of Margin of Dumping:** The margin of dumping works out to 390% and 448% for UAE and Chinese Taipei respectively and therefore, found to be substantial.

(e) **Actual and potential negative effect on cash flows:** Cash flow and return on capital employed follows the trend of profitability, which again became negative in respect of domestic sales in the period of investigation after being positive in the immediately preceding year.

(f) **Growth:** The demand for the subject goods has shown steady growth. However, the Company has not made any additional investments and its installed capacity continues to remain same.

- (g) **Export sales** of the domestic industry have shown significant increase during the period of investigation. However, the increase in exports of the domestic industry is due to the fact that the domestic market has been taken over largely by the dumped imports from the subject countries.
- (h) **Inventory:** Average stocks with the domestic industry have increased over the period which indicates that the domestic industry is unable to off load its total production to the domestic market in spite of healthy demand.
- (i) **Productivity:** Production per working day has increased on the lines of increase in the production levels. However, the productivity increase is largely due to increase in its export activity.
- (60) **Past Losses:** The Authority also examined the reasons for past losses being suffered by the domestic industry in the domestic market. It was found that the Applicant was earlier suffering financial losses due to following reasons:-
1. **Financial Restructuring:** - Applicant was earlier suffering from high rate of interest, resulting in high incidence of interest cost. The financial restructuring undertaken by the company resulted in significant reduction in the interest cost. In order to assess the impact of financial restructuring on the profitability of the company, Authority assessed what would have been Applicant's profitability in the period 1999-2001. Authority considers that this profitability is the only relevant profitability for the present purpose, the actual profit/loss being tinted due to higher rate of interest.
 2. **Excise Duty:** - Applicant was earlier paying excise duty @ 24% ad valorem. Given the nature of the product involved (there is no MODVAT available to the consumers), the Applicant had no option but to bear the excise duty. Higher rate of excise duty in the year 1999-2000 effectively resulted in lower net sales realization to the Applicant. However, the excise duty was reduced from 24% (1999-00) to 16% thereafter. Since the cost on this account was effectively being borne by the domestic industry, this resulted in improvement in the sales realization and resultant profitability. Considering that it would not be appropriate to treat the losses to the Company in the year 1999-2000 resulting from higher incidence of excise duty, impact of this on losses to the Company have been nullified while arriving at profitability of the product for the present purpose.
 3. **Lower plant utilization:** - Applicant was earlier not able to produce optimally due to lack of demand in the Country. Export market was also limited. Resultantly, production of the Applicant was lower than expected in the earlier years. This resulted in higher incidence of overhead costs, resulting in higher cost of production of the Applicant. This higher cost could not have been legitimately passed on to the consumers, resulting in injury to the domestic industry. With increase in production, the profitability of the domestic industry improved. However, this remained short lived and the performance again deteriorated in the investigation period, now due to dumping.

4. It would also be relevant to point out that the applicant has significant export activities, viability of which also depends on viability of the Applicant in the domestic market. The applicant would not be able to sustain itself in the domestic market, which would imply not only injury to the Applicant from the production and sales in the domestic market but also in the export markets.

H.4 Determination of Non-injurious Price of the Domestic Industry

(61) The authority determined a Non-injurious Price for the subject goods after a detailed analysis and scrutiny of information provided by the domestic industry and verified by the authority.

(62) The cost information on all relevant factors concerning the production and the production process were called in the prescribed pro-forma for the period of investigation and for the preceding years. The actual cost of production of the subject goods for the domestic industry has been used to determine optimum cost of production on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP). In the determination of Non-injurious price for the domestic industry, the Authority has examined and analyzed, in detail, all the relevant factors including cost of raw materials used in the production of subject goods, the consumption thereof, the cost of utilities viz. Power, water etc., interest cost, cost of labour, depreciation cost and selling and administrative expenses. The factors such as investments made in Plant and the capacity utilization have also been examined in the cost analysis. All these factors have been determined with reference to the basic books of accounts and production and financial statements. The Non-injurious price for the domestic industry has been determined by addition to the cost of production of a reasonable profit margin on the capital employed by the Applicant.

(63) Accordingly, weighted average Non-injurious price for the domestic industry has been determined by the Authority as Rs.***** per Kg.

H.5 Magnitude of Injury and injury margin

(64) The non-injurious price determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports for determination of injury margin. The weighted average landed price of the exports from the subject countries have been arrived at as follows:

Injury Margin Calculation		
	Rs Per Kg	
	Chinese Taipei	UAE
Weighted Average C & F Price as per DGCIS data	*****	*****
Plus Landing Charge		
Assessable Value	*****	*****
Plus basic customs duty	*****	*****
Weighted Average Landed price	*****	*****
NIP		*****
Injury Margin as a percentage of landed value	600 to 750%	800 to 900%

I. Causal Link:

(65) After examining the injury parameters and factors affecting the domestic industry, the Authority examined whether there are any other factors that might have caused injury to the domestic industry and whether the dumping can be directly attributed to the injury suffered by the domestic industry. In this respect the Authority makes the following observations:

- (i) Examination of the various parameters affecting the domestic industry indicates that the significant price undercutting has resulted in significant decline in market share and resultant in profitability, cash flow and ROI of the domestic industry. Significant increase in market share of the dumped imports directly resulted in decline in market share of the domestic industry. As a direct consequence, the domestic industry registered decline in sales volumes and negative growth after having positive growth upto 2001-2002. It is thus noted that the performance of the domestic industry deteriorated in the POI after continuously improving between 1999-2000 and 2001-02. This decline in the performance of the domestic industry in the POI is a direct result of dumped imports in the market.
- (ii) The imports from other countries are at higher prices. At the same time, their share has declined in the POI after showing improvement till 2001-2002. Imports from other countries could not have, therefore, caused material injury to the domestic industry, nor there is any quantified evidence brought to the knowledge of the Authority that injury to the domestic industry could have been caused by imports from other countries.
- (iii) Demand of the subject goods has shown an increase. However, the increase in domestic sales growth is negative. Thus, in spite of growing market and significant capacity, Applicant is not able to increase its domestic sales. As a direct result, market share of the domestic industry declined significantly whereas the market share of dumped imports from the subject countries increased significantly. Therefore, possible decline in demand could not have caused material injury to the domestic industry.
- (iv) The domestic industry is exporting the product to a number of countries in the world. Not only that its export price is higher, but also the volumes have increased. Export performance of the domestic industry could not, therefore, have been a cause of material injury to the domestic industry.
- (v) It has been argued by Orpro Company, UAE that the reason for injury to the domestic industry is due to inefficient process employed by Applicant. However, while the claim of Orpro is unsubstantiated and without any verifiable evidence, this party has also contradicted itself in its response to the disclosure.
- (vi) The domestic industry has exported the material to a number of countries in the world including UAE and Chinese Taipei at prices much higher than the price at which the material has been imported into India. The price at which the material has been exported to India from the subject countries is lower than the price of plain polyester film, leave aside cost of other chemicals which form a substantial part of costs and which have to be added to produce subject goods. Further, cost of conversion of the plain film to the subject goods also calls for substantial value addition. It cannot, therefore, be said that the domestic industry has employed relatively inefficient process.

- (vii) It has been further argued by M/s ORPRO that Garware Polyester Limited has not suffered material or injury by the sales made into India from the UAE and on the contrary, Garware has gone on record to say that it expects to increase the turnover of its sun control film division during the fiscal year 2002-2003. However, the Authority notes that the Domestic industry exports a substantial proportion of its sales to other countries at prices much higher than the domestic sales realization. Therefore, exports of the applicant is not a cause of injury.
- (viii) No other factor which could have possibly caused injury to the domestic industry has been brought to the knowledge of Authority.

J. Conclusion on Injury and Causal Links

(66) On the basis of the above examination the Authority concludes that

- ◆ the subject goods exported from the subject countries are at a prices far below their normal value, and the dumping margin determined in respect of the subject countries are substantial and above de minimis;
- ◆ the subject goods exported from the subject countries are at prices below the Non-Injurious Price of the domestic industry and the average sales realization of the subject goods of the Applicant, thus causing price underselling and price undercutting;
- ◆ the domestic industry has not been able to realize remunerative price for the subject goods due to the price suppression and depression effects of the imported goods from the subject countries;
- ◆ the domestic industry has suffered material injury due to the dumped imports from the subject countries. Volume and prices of imports from the subject countries at dumped prices have contributed to the material injury of the domestic industry;
- ◆ There is a clear causal link between the dumped imports and the injury suffered by the domestic industry and the injuries caused by other factors have not been attributed to the injury suffered by the domestic industry.

K. INDIAN INDUSTRY'S INTERESTS AND OTHER ISSUES

(67) The Authority notes that the product under consideration is a product, which is directly used by the consumers and does not go into further processing to any substantial extent. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

I. CONCLUSIONS

(68) After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise, as recorded in the above findings, the authority concludes that:

- i) The subject goods originating in or exported from the subject countries have been exported to India below its normal value;
- ii) The domestic industry has suffered material injury; and
- iii) The injury has been caused to the domestic industry both by volume and price effect of dumped imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries.

J. RECOMMENDATIONS:

(69) After concluding that dumping from the subject countries have caused injury to the like product domestic industry and having established the causal link between the dumping and injury, the Authority considers it necessary, and recommends anti-dumping duty on imports of subject goods in the form and manner described hereunder.

(70) Having regards to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority is of the view that anti dumping duty equal to the margin of dumping or less, that would remove the injury to the domestic industry will be appropriate in this case. Accordingly the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of dumping so as to remove the injury to the domestic industry caused on account of dumping.

(71) The domestic industry has pleaded that antidumping duty in the form of fixed duty should be imposed in Rupee term in this case. However, considering the nature of the product, the Authority is of the view that imposition of antidumping duty on a reference price basis would be appropriate measure to neutralize the effects of dumped imports. Accordingly, it is recommended that definitive Anti Dumping Duty equal to the difference between the amount indicated in column (9) in duty table annexed to this finding, and the landed value of imports, upon importation into India, be imposed on all grades of subject goods, originating in or exported from Chinese Taipei and UAE.

(72) The definitive duty so recommended shall be collected retroactively from the date of imposition of provisional duty in terms of Rule 20(2)(a).

(73) Subject to the above, the Authority confirms the Preliminary Findings dated 25th July, 2003.

K. FURTHER PROCEDURES

(74) An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal, in accordance with the relevant provisions of the Act,.

(75) The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure, as recommended herein, from time to time as per the relevant provisions of the Act, and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time limit stipulated for this purpose.

ABHIJIT SENGUPTA, Designated Authority

24

Annexure**DUTY TABLE**

S. No:	Custom sub-heading	Description of goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Reference Price	Unit of Measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
1.	39 20 6	Sun/Dust Control Polyester Film	Any Specification	Chinese Taipei	Any Country	Any Producer	Any Exporter	7.99	Per Kg	US \$
2.	39 20 6	Sun/Dust Control Polyester Film	Any Specification	Any country except UAE	Chinese Taipei	Any Producer	Any Exporter	7.99	Per Kg	US \$
3.	39 20 6	Sun/Dust Control Polyester Film	Any Specification	UAE	Any Country	Any Producer	Any Exporter	8.17	Per Kg	US \$
4.	39 20 6	Sun/Dust Control Polyester Film	Any Specification	Any country except Chinese Taipei	UAE	Any Producer	Any Exporter	8.17	Per Kg	US \$